नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 085
दि. 27.12.2025,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

बीएमसी की जंग में गठबंधन तय, राज–उद्धव की सियासी सुलह और महायुति की रणनीति से मुंबई का चुनावी मैदान गरमाया

(जीएनएस)। मुंबई की सत्ता पर काबिज होने की लड़ाई अब निर्णायक मोड़ की ओर बढ़ती दिख रही है। लंबे समय से सीटों के बंटवारे को लेकर चल रही खींचतान के बाद आखिरकार महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना और उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना के बीच सहमति लगभग तय हो गई है। राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे की सियासी नजदीकी ने बीएमसी चुनाव को नई दिशा दे दी है। इस समझौते के साथ ही विपक्षी खेमे में नई ऊर्जा का संचार हुआ है, वहीं सत्ताधारी महायुति भी पीछे हटने के मूड में नहीं है और उसने भी सीटों के तालमेल को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया तेज कर दी है। मुंबई महानगरपालिका चुनाव को अगर विपक्ष के लिए अस्तित्व की लड़ाई माना जा रहा है, तो महायुति के लिए यह अपनी राजनीतिक पकड़ और वर्चस्व को साबित करने का सबसे बड़ा अवसर बन गया है। अब तक दोनों ही खेमों में सीटों के बंटवारे को लेकर असमंजस की स्थिति बनी हुई थी, लेकिन ताजा सियासी संकेत बताते हैं कि जल्द ही तस्वीर साफ हो सकती है। विश्वसनीय सूत्रों के मुताबिक मनसे और उद्धव ठाकरे की शिवसेना के बीच सीटों को लेकर मोटे तौर पर सहमति बन चुकी है और इसी के तहत मनसे ने अपने उम्मीदवारों की सूची भी अंतिम रूप दे दिया है। शुक्रवार सुबह मनसे और शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के वरिष्ठ नेताओं के बीच अहम बैठक हुई। बैठक के बाद मनसे नेता नितीन सरदेसाई और बाला नांदगांवकर एक बंद लिफाफा

लेकर राज ठाकरे के निवास 'शिवतीर्थ' पहुंचे। बताया जा रहा है कि इस खाकी लिफाफे में मनसे के उम्मीदवारों की अंतिम सूची थी, जिसे राज ठाकरे की मंजूरी के लिए सौंपा गया है। सूत्रों के अनुसार, जैसे ही राज ठाकरे की हरी झंडी मिलेगी, उम्मीदवारों को मनसे कार्यालय से फोन कर सूचना दी जाएगी और ए–बी फॉर्म वितरित किए जाएंगे। नामांकन दाखिल करने की समयसीमा को देखते हुए पूरी प्रक्रिया को तेज रफ्तार में पूरा किया जा रहा है।

उधर, विपक्षी खेमे में इस सियासी समीकरण के बनने के बाद समन्वय और एकजुटता की कोशिशें और तेज हो गई हैं। इसी कड़ी में शरद पवार गुट के वरिष्ठ नेता जयंत पाटील ने उद्धव ठाकरे से मुलाकात की, जिसे बीएमसी चुनाव के लिहाज से बेहद अहम माना जा रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि राज और उद्धव ठाकरे का साथ आना विपक्ष के लिए मनोवैज्ञानिक बढ़त लेकर आया है और अब महाविकास अघाड़ी के अन्य घटक दल भी आपसी मतभेद भुलाकर साझा रणनीति की ओर बढ़ सकते हैं। दूसरी ओर, सत्ताधारी महायुति भी पूरी ताकत के साथ मैदान में उतरने की तैयारी कर रही है। भाजपा और एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के बीच अधिकांश सीटों पर तालमेल लगभग तय बताया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक करीब 200 सीटों पर सहमति बन चुकी है, हालांकि अभी भी लगभग 27 सीटें ऐसी हैं, जिन पर अंतिम फैसला होना बाकी है। भाजपा अब करीब 125 सीटों पर चुनाव लड़ने को तैयार बताई जा रही है, जबकि शिंदे गुट की शिवसेना 101 सीटों की मांग पर अड़ी हुई है। कुछ रिपोर्टों में यह भी कहा जा रहा है कि शिंदे गुट 125 सीटों की मांग कर रहा है, जिससे अजित पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के लिए सीटों का गणित और पेचीदा हो गया है। कुल 227 सीटों वाली बीएमसी में सभी सहयोगियों को संतुष्ट करना महायुति के लिए बड़ी चुनौती बना हुआ है।

महायुति के सामने चुनौतियां सिर्फ सीटों के बंटवारे तक सीमित नहीं हैं। अजित पवार गुट की नाराजगी, नवाब मलिक को लेकर भाजपा की आपत्तियां और ठाकरे बंधुओं के एक साथ आने से मराठी मानुष के मुद्दे पर बनने वाला माहौल भी सत्ताधारी गठबंधन के लिए नई मुश्किलें खड़ी कर सकता है। वहीं उद्धव ठाकरे की नजर उन इलाकों पर है, जहां 2024 के लोकसभा चुनाव में उनकी पार्टी को मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में मजबूत समर्थन मिला था।

कुल मिलाकर, बीएमसी चुनाव अब सीधी राजनीतिक टक्कर का रूप ले चुका है। एक ओर राज और उद्धव ठाकरे की जोड़ी विपक्ष को धार देने की कोशिश में है, तो दूसरी ओर महायुति अपनी एकजुटता और सत्ता के अनुभव के सहारे मैदान मारने की रणनीति बना रही है। जैसे ही सीट बंटवारे की औपचारिक घोषणा होगी, मुंबई की सियासत में जुबानी जंग और आरोप–प्रत्यारोप का दौर और तेज होने की पूरी संभावना है। मुंबई की सत्ता की चाबी किसके हाथ लगेगी, इसका फैसला अब मतदाता करेंगे, लेकिन इतना तय है कि यह चुनाव अब तक के सबसे दिलचस्प और कड़े मुकाबलों में से एक होने जा रहा है।

ऑस्ट्रेलियन एडवाइजरी ने भारत में नकली रेबीज वैक्सीन के खतरों को बताया गंभीर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया की सरकार की विशेषज्ञ संस्था ऑस्ट्रेलियन टेक्निकल एडवाइजरी ग्रुप ऑन इम्यूनाइजेशन (ATAGI) ने शुक्रवार को भारत में इस्तेमाल हो रही ABHAYRAB ब्रांड की रेबीज वैक्सीन को लेकर चेतावनी जारी की है। इस चेतावनी में स्पष्ट किया गया कि ABHAYRAB वैक्सीन नकली है और इसका रेबीज से सुरक्षा देने में कोई प्रभाव नहीं है। ATAGI ने कहा कि इस ब्रांड में वैक्सीन के सक्रिय तत्व सही मात्रा में मौजूद नहीं हैं, इसलिए इसका इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति अपने पोस्ट-एक्सपोजर ट्रीटमेंट को संभावित रूप से अमान्य मानें और जल्द से जल्द Rabipur या Verorab जैसी पंजीकृत वैक्सीन से इसकी जगह लेने की सलाह दी गई है।

विशेषज्ञों के मुताबिक, यह एडवाइजरी खासकर उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण है जिन्होंने नवंबर 2023 के बाद भारत में ABHAYRAB वैक्सीन लगवाई है। ऑस्ट्रेलियाई अधिकारियों ने यात्रियों और स्वास्थ्यकर्मियों को सलाह दी है कि वे वैक्सीनेशन रिकॉर्ड की समीक्षा करें और

किसी भी संशयास्पद डोज की स्थिति में तुरंत योग्य डॉक्टर से परामर्श लें। ATAGI ने कहा कि वैक्सीनेशन की सही डोज और मान्यता प्राप्त ब्रांड का उपयोग रेबीज जैसी जानलेवा बीमारी से बचाव में निर्णायक है।

रेबीज बीमारी भारत में एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या बनी हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, भारत में हर साल लगभग 18,000 से 20,000 लोगों की मौत रेबीज के कारण होती है, जिनमें अधिकांश मामले कुत्तों के काटने से होते हैं। औसतन हर 30 मिनट में एक व्यक्ति इस रोग से दम तोड़ता है। रेबीज के लक्षण विकसित होने के बाद यह लगभग हमेशा घातक साबित होती है और मरीज का बचना पूरी तरह समय पर और सही तरीके से पोस्ट-एक्सपोजर ट्रीटमेंट पर निर्भर करता है। इसमें घाव को तुरंत साफ करना, निर्धारित समय पर वैक्सीन की डोज लेना और गंभीर मामलों में रेबीज इम्यूनोग्लोबुलिन (RIG) देना शामिल होता है।

हाल ही में महाराष्ट्र के ठाणे में छह साल की एक बच्ची की रेबीज से मौत ने इस समस्या को और गंभीर रूप से उजागर किया। बच्ची को चार डोज वैक्सीन दी गई थीं, फिर भी उसकी जान नहीं बच सकी। प्रारंभिक जांच में यह पता चला कि रेबीज इम्यूनोग्लोबुलिन (RIG) देने को लेकर डॉक्टरों और स्वास्थ्य अधिकारियों के बयान भिन्न रहे, जिससे इलाज में खामियां सामने आईं।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि भारत में वैक्सीन की गुणवत्ता और सही डोज सुनिश्चित करना बहुत जरूरी है। ATAGI ने सभी लोगों से आग्रह किया है कि वे वैक्सीनेशन का पूरा रिकॉर्ड रखें और यदि किसी को शक है कि वैक्सीन नकली या अमान्य हो सकती है, तो तुरंत योग्य स्वास्थ्यकर्मी से संपर्क करें। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जिन लोगों को भारत के बाहर वैक्सीन लगी है या जिनके पास पंजीकृत वैक्सीन का प्रमाण है, उन पर यह एडवाइजरी लागू नहीं होती।

विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि रेबीज के मामले में देरी और गलत वैक्सीन का इस्तेमाल जानलेवा साबित हो सकता है, इसलिए स्वास्थ्य विभाग और नागरिकों को इस मुद्दे पर सतर्क रहने की सख्त आवश्यकता है। सरकार और स्वास्थ्य एजेंसियों को भी बाजार में नकली वैक्सीन की बिक्री को रोकने और वैक्सीन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए तत्काल कदम उठाने की जरूरत है।

केरल में कांग्रेस नेता के खिलाफ एआई से बनी तस्वीर शेयर करने पर मामला दर्ज

(जीएनएस)। कोझिकोड। केरल में कांग्रेस नेता एन सुब्रमण्यम के खिलाफ एआई (Artificial Intelligence) तकनीक का इस्तेमाल करके बनाई गई तस्वीर सोशल मीडिया पर साझा करने के आरोप में मामला दर्ज किया गया है। मामला मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन और सबरीमाला सोना चोरी मामले के आरोपी उन्नीकृष्णन पोट्टी की तस्वीर से जुड़ा हुआ है। अधिकारियों ने शुक्रवार को इसकी जानकारी दी। केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी की पॉलिटिकल अफेयर्स कमेटी के सदस्य करुवत्तूर के एन सुब्रमण्यम के खिलाफ मामला कोझिकोड जिले के चेवायूर पुलिस स्टेशन में दर्ज किया गया। एफआईआर के अनुसार, सुब्रमण्यम ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर ऐसा पोस्ट साझा किया था जिसमें मुख्यमंत्री और पोट्टी को एक साथ दिखाया गया था। शुरुआती जांच में पुलिस ने पाया कि यह तस्वीर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल करके तैयार की गई थी और वास्तविकता से मेल नहीं खाती।

पुलिस ने बताया कि मामले की गंभीरता को देखते हुए आगे की जांच शुरू कर दी गई है। एआई तकनीक के माध्यम से बनायी गई ऐसी तस्वीरें राजनीतिक और सामाजिक माहौल में गलत सूचना फैलाने का काम कर सकती हैं, इसलिए कानूनी कार्रवाई की जा रही है। इस घटना से यह सवाल भी उठता है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर सामग्री की सत्यता सुनिश्चित करने के लिए और सख्त नियमों की आवश्यकता है।

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि सोशल मीडिया पर एआई से तैयार की गई तस्वीरों के जरिए किसी भी राजनीतिक नेता या व्यक्ति की छवि को प्रभावित करना आसान हो गया है। इस मामले में पुलिस और प्रशासन की सक्रियता यह दर्शाती है कि फेक और मनगढ़ंत डिजिटल कंटेंट के खिलाफ कानून के तहत कार्रवाई की जाएगी। वहीं, कांग्रेस पार्टी के भीतर भी इस मामले को लेकर चर्चा शुरू हो गई है और यह देखा जा रहा है कि भविष्य में सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयरिंग में सावधानी बरती जाए।

मणिपुर में मुठभेड़ में 40 करोड़ रुपये की नशीली गोलियां जब्त, एक गिरफ्तार

(जीएनएस)। इंफाल। मणिपुर के जिरीबाम जिले में असम राइफल्स और मणिपुर पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में बड़े पैमाने पर नशीली दवाओं की तस्करी पर अंकुश लगाया गया है। इस

अभियान में करीब 40 करोड़ रुपये मूल्य की प्रतिबंधित याबा गोलियां जब्त की गईं और एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया। यह कार्रवाई 24 दिसंबर को जिरीबाम क्षेत्र में की गई। असम राइफल्स की ओर से जारी बयान के अनुसार, संयुक्त अभियान के दौरान एक लाख 60 हजार याबा गोलियां बरामद की गईं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में इन गोलियों की अनुमानित कीमत लगभग 40 करोड़ रुपये बताई जा रही है। नशीली पदार्थों के साथ पकड़े गए आरोपी को पुलिस के हवाले कर दिया गया है और उसकी गिरफ्तारी के बाद आगे की जांच शुरू कर दी गई है। याबा गोलियां, जिसे थाई भाषा में 'क्रेजी मेडिसिन' कहा जाता है, अत्यंत खतरनाक मानी जाती हैं। इसमें मेथामफेटामिन और कैफीन का मिश्रण होता है, जो केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को उत्तेजित करता है और स्वास्थ्य के लिए गंभीर जोखिम पैदा करता है। इसके सेवन से व्यक्ति में मानसिक और शारीरिक दोनों तरह की समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि याबा जैसी नशीली दवाएं युवाओं के लिए सबसे ज्यादा खतरा हैं और तस्करी रोकने के लिए सुरक्षा बलों की सतत निगरानी और सख्त कार्रवाई की आवश्यकता है। मणिपुर में यह गिरफ्तारी न केवल तस्करी के खिलाफ महत्वपूर्ण कदम है, बल्कि राज्य और देश में बढ़ती नशा समस्याओं पर नियंत्रण के प्रयासों में भी एक मजबूत संदेश देती है। पुलिस अधिकारियों ने कहा कि मामले की जांच जारी है और इस तस्करी के नेटवर्क का पता लगाने के लिए आगे और अभियान चलाए जाएंगे। यह कार्रवाई क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने और नशे के प्रसार को रोकने की दिशा में

कांग्रेस की सीडब्ल्यूसी की अहम बैठक आज नई दिल्ली में, मनरेगा हटने और चुनावी रणनीति पर होगी मंथन

(जीएनएस)। नई दिल्ली। कांग्रेस की सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था, कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सीडब्ल्यूसी), शनिवार को नई दिल्ली में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित कर रही है। इस बैठक का मकसद मौजूदा राजनीतिक हालात का आकलन करना और केंद्र सरकार के खिलाफ आगे की रणनीति तैयार करना है। खास बात यह है कि यह बैठक महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) को हटाकर नए वीबी-जी रामजी (ग्रामीण) कानून लागू किए जाने के बाद बुलाई गई है, जिसे कांग्रेस ने ग्रामीण गरीब और मजदूर वर्ग के हितों के खिलाफ बताया है। इस सीडब्ल्यूसी बैठक में कांग्रेस शासित राज्यों—कर्नाटक, तेलंगाना और हिमाचल प्रदेश—के मुख्यमंत्री, प्रदेश कांग्रेस कमेटियों (पीसीसी) के अध्यक्ष, सांसद, और अन्य वरिष्ठ नेता भाग ले रहे हैं। बैठक में खास तौर पर बिहार विधानसभा चुनाव में मिली हार का विश्लेषण भी किया जाएगा। माना जा रहा है कि इस बैठक के दौरान पार्टी के वरिष्ठ नेता आगामी विधानसभा चुनावों की रणनीति पर गहन मंथन करेंगे। अगले वर्ष असम, केरल, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और पुडुचेरी में विधानसभा चुनाव होने हैं, इसलिए कांग्रेस के लिए यह बैठक राजनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि सीडब्ल्यूसी की इस बैठक में न केवल मनरेगा हटने पर केंद्र सरकार की आलोचना की जाएगी, बल्कि विपक्षी एकता, पार्टी संगठन को मजबूत करने और चुनावी तैयारियों को लेकर भी दिशा-निर्देश जारी किए जाएंगे। बिहार में मिली हार के बाद पार्टी के लिए यह बैठक अपने संगठनात्मक ढांचे और नीतियों में सुधार का अवसर भी साबित हो सकती है।

बैठक में चर्चा के मुख्य बिंदुओं में आगामी चुनावों के लिए उम्मीदवारों का चयन, राजनीतिक संदेश और चुनाव प्रचार की रणनीति शामिल होंगे। इसके अलावा, ग्रामीण विकास, बेरोजगारी और कृषि संकट जैसे मुद्दों को उठाकर सरकार पर दबाव बनाने की रणनीति पर भी विचार किया जाएगा। पार्टी सूत्रों के अनुसार, सीडब्ल्यूसी में निर्णय लिए जाने के बाद कांग्रेस अगले कुछ महीनों में अपने कार्यक्रमों और विरोध गतिविधियों को और तीव्र कर सकती है। विशेषज्ञ मानते हैं कि इस बैठक का परिणाम केवल रणनीतिक दिशा तय करना नहीं होगा, बल्कि इससे यह संकेत भी मिलेगा कि कांग्रेस आगामी साल में देश के राजनीतिक परिदृश्य में कितनी सक्रिय और निर्णायक भूमिका निभाने जा रही है। यह बैठक कांग्रेस की ताकत और संगठनात्मक क्षमता का भी आईना होगी, क्योंकि आगामी विधानसभा चुनावों में पार्टी की सफलता या असफलता कई हद तक इसी बैठक में तय किए गए रोडमैप पर निर्भर करेगी।

बॉम्बे हाईकोर्ट का सख्त आदेश: भारत रत्न और पद्म पुरस्कार नाम के आगे या पीछे नहीं लिखे जा सकते, नागरिक सम्मान हैं टाइटल नहीं

(जीएनएस)। मुंबई। बॉम्बे हाईकोर्ट ने एक स्पष्ट और ऐतिहासिक आदेश जारी किया है, जिसमें कहा गया है कि भारत रत्न, पद्म श्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण जैसे सर्वोच्च नागरिक सम्मान किसी भी व्यक्ति के नाम के आगे या पीछे नहीं लिखे जा सकते। न्यायालय ने यह निर्देश

एक याचिका के दौरान सुनवाई के क्रम में दिया, जिसमें 2004 में पद्म श्री से सम्मानित डॉ. शरद मोरेश्वर हार्डिकर का नाम केस टाइटल में "पद्म श्री डॉ. शरद मोरेश्वर हार्डिकर" के रूप में लिखा गया था। इस मामले पर जस्टिस सोमशेखर सुंदरेसन की बेंच ने कड़ा रुख अपनाते हुए कहा कि कानून के अनुसार ऐसे प्रयोग को रोकना आवश्यक है और यह गैरकानूनी है। हाईकोर्ट ने अपने आदेश में 1995 में सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हवाला दिया। उस समय सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने स्पष्ट किया था कि पद्म पुरस्कार और भारत रत्न उपाधि नहीं हैं और इन्हें नाम के आगे या पीछे किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। जस्टिस सुंदरेसन ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला अनुच्छेद 141 के तहत सभी पर लागू होता है और सभी अदालतें, सरकारी विभाग और नागरिक इसका सख्ती से पालन करें। अदालत ने यह भी निर्देश दिया कि आगे किसी कानूनी दस्तावेज़ या सार्वजनिक अभिलेख में इन पुरस्कारों को नाम के साथ जोड़ने की कोशिश नहीं की जाए। देश में पद्म पुरस्कार तीन श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं—पद्म श्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण। ये पुरस्कार कला, साहित्य, शिक्षा, समाज सेवा, विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, खेल, बिजनेस, उद्योग और सिविल सेवा जैसे विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिए जाते हैं। कोर्ट ने यह स्पष्ट किया कि इन पुरस्कारों का उद्देश्य केवल व्यक्ति की उपलब्धियों को मान्यता देना है, न कि उनके नाम के साथ किसी तरह की उपाधि या सामाजिक स्थिति दर्शाना।

इस आदेश के बाद यह सुनिश्चित किया जाएगा कि भविष्य में किसी भी सरकारी दस्तावेज़, मीडिया रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्ति या कानूनी अभिलेख में पद्म पुरस्कार या भारत रत्न का नाम व्यक्ति के साथ टाइटल की तरह प्रयोग नहीं किया जाएगा। न्यायालय ने कहा कि नियम का उल्लंघन होने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इस कदम को विशेषज्ञ नागरिक सम्मान की गरिमा बनाए रखने और उनके सही उपयोग की दिशा में महत्वपूर्ण माना रहे हैं।

हाईकोर्ट ने यह भी सुझाव दिया कि समाज और मीडिया को जागरूक किया जाए ताकि सामान्य जनता में यह समझ बढ़ सके कि भारत रत्न और पद्म पुरस्कार केवल सम्मान हैं, टाइटल नहीं। इस फैसले के बाद नागरिक और संस्थाएं इन पुरस्कारों के सही प्रयोग के प्रति अधिक सतर्क और जिम्मेदार हो सकेंगे, जिससे पुरस्कारों की महत्ता और गरिमा और अधिक स्थापित होगी।

संपादकीय

पंजाब के किसानों को आर्थिक संबल जरूरी

एक समय था जब पंजाब के ग्रामीण अंचलों में खिले हुए सरसों के खेत मौसमी बयार में बदलाव के प्रतीक हुआ करते थे। तमाम सांस्कृतिक प्रतिमानों में पीले सरसों के खेतों को मौसम के गौरव के रूप में चित्रित किया जाता रहा है। लेकिन वक्त की विडंबना है कि यह अब यह सुनहरी फसल सिमटती नजर आ रही है। जिसके परिणाम स्वरूप आज देश में हम खाद्य तेलों की पर्याप्त आपूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। यही वजह है कि भारत लगातार आयातित खाद्य तेलों पर अत्यधिक निर्भर होता जा रहा है। निश्चय ही यह स्थिति व्यवस्था के कई विरोधाभासों को भी उजागर कर रही है। यह तथ्य चौंकाता है कि पंजाब में सरसों के उत्पादन में इसलिए गिरावट नहीं आ रही है कि फसल उत्पादन क्षमता में किसी तरह की कोई कमी आई है। बल्कि यह स्थिति इसलिए है कि सरकारों की नीतियां प्रोत्साहन देने वाली साबित नहीं हो रही हैं। वहीं बाजार के रुझान इसे आर्थिक रूप से किसानों के हितों के प्रतिकूल बना रहे हैं। कहने को तो अकसर दलील दी जाती है कि पंजाब के किसानी से जुड़े संकटों का समाधान फसलों के विविधीकरण में निहित है। लेकिन विडंबना यह है कि विविधीकरण के दावों के बावजूद, सरसों के उत्पादक किसान प्रोत्साहन न मिल पाने से निराश हैं। दरअसल, किसान कम और अनिश्चित मुनाफे के चलते सरसों की फसल उगाने से गुरेज करता है। उसके सामने बड़ी चुनौती यह भी है कि सरसों की फसल की सरकारी खरीद सीमित मात्रा में होती है। जिसके चलते किसानों को खून-पसीने की उपज को बेचने के लिये व्यापारियों के रहमोकरम पर निर्भर रहना पड़ता है। वे अपने मोटे मुनाफे के लिये किसान के हितों की अनदेखी करने से नहीं चूकते। यही वजह है कि गेहूं और धान के विपरीत, जिनकी खरीद सुनिश्चित है और उनके लिये मजबूत विपणन प्रणाली मौजूद है, सरसों की फसल किसानों को बाजार की अस्थिरता के प्रति संवेदनशील बना देती है। फलतः किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

दरअसल, इस संकट का दूसरा पहलू यह भी है कि पंजाब आज अपनी खाद्य तेल आवश्यकताओं का एक मामूली हिस्सा ही स्थानीय उत्पादन से पूरा करता है। इससे हमारी महंगे आयात पर निर्भरता और भी बढ़ जाती है। तिलहन की खेती को बढ़ावा देना अक्सर राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सही मायनों में सरकारी तंत्र द्वारा सरसों की उपज की खरीद में सहायता और न्यायसंगत मूल्य दिलाने के वायदे खोखले साबित होने के कारण सरसों की पैदावार का रकबा बढ़ता नहीं है। जिस दिन किसानों को तंत्र की नीतियों पर भरोसा पैदा हो जाएगा, उस दिन निश्चय ही किसान प्रोत्साहन के चलते तर्कसंगत प्रतिक्रिया देंगे। निर्विवाद रूप से पंजाब की धरती में सरसों उत्पादन की स्थितियों से जुड़ी संभावनाएं पर्याप्त हैं। यकीनी तौर पर यह धान की तुलना में कम पानी की खपत करती है। साथ ही भूजल संकट को कम करने के उद्देश्य से फसल विविधीकरण से जुड़ी रणनीतियों में स्वाभाविक रूप से फिट बैठती है। लेकिन हमें इस हकीकत को स्वीकार करना चाहिए कि पंजाब में विविधीकरण के लक्ष्य केवल नैतिक प्रोत्साहन से हासिल नहीं किए जा सकते। निश्चित रूप से इसके लिए अनिवार्य शर्त है कि बाजार की संरचना में जरूरत के अनुरूप बदलाव प्राथमिकता के आधार पर किए जाएं। सही मायनों में सरसों के लिये एमएसपी समर्थित खरीद और स्थानीय प्रसंस्करण, भंडारण और मूल्य श्रृंखलाओं में निवेश किसानों को सरसों की खेती अपनाने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है। यही प्रयास पंजाब के खेतों में पीली आभा फिर से पैदा करने की दिशा में कारगर साबित होंगे। सही मायनों में पंजाब में सरसों की खेती की कहानी नीतिगत विसंगतियों को ही उजागर करती है। दरअसल, संस्थागत स्तर पर समर्थन कुछ चुनिंदा फसलों को दिया जाता रहा है। जब तक यह असंतुलन दूर नहीं किया जाता, सरसों एक खोये हुए अवसर का प्रतीक बनकर रह जाएगी। इस फसल के पुनरुद्धार के लिये महज नारों की ही नहीं, बल्कि उसी गंभीरता की आवश्यकता है, जो गेहूं और धान की फसलों को लेकर लंबे समय से बरती जाती रही है।

चक्रव्यूह से मुक्त वसीयत का 'आजादी महोत्सव'

> "भविष्य की कानूनी लड़ाइयों से बचने के लिए आज भी दो गवाहों की मौजूदगी में स्पष्ट वसीयत लिखना ही एकमात्र अचूक मंत्र है। कानून ने अनिवार्य प्रोबेट की लाठी छीन ली है, लेकिन समझदारी का छाता आपके हाथ में छोड़ दिया है।

भारत में अपनी ही संपत्ति को अपनों के नाम छोड़ जाने की प्रक्रिया अक्सर एक कानूनी दुःस्वप्न बन जाती थी। लेकिन संसद ने 'निरसन और संशोधन विधेयक, 2025' के जरिए भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम की बेड़ियां काटकर एक नई सुबह का आगाज किया है। सालों से चली आ रही 'प्रोबेट' की अनिवार्य शर्त को अब इतिहास के कूड़ेदान में डाल दिया गया है। सरल शब्दों में कहें तो, अब मरने वाले की अंतिम इच्छा यानी उसकी 'वसीयत' को कानूनी मान्यता दिलाने के लिए अदालतों की लंबी कतारों और भारी-भरकम फीस से मुक्ति मिल गई है।

सरल शब्दों में समझें तो 'प्रोबेट' अदालत द्वारा जारी किया गया वह प्रमाणपत्र है, जो कानूनी रूप से यह तस्दीक करता है कि वसीयत पूरी तरह असली है और इसे बनाने वाला व्यक्ति (वसीयतकर्ता) इसे लिखते समय पूरी तरह होश-ओ-हवास और सही मानसिक स्थिति में था। अब तक हमारा कानून एक अजीब विरोधाभास और 'क्षेत्रीय भेदभाव' का शिकार था। अगर आप मुंबई, कोलकाता या चेन्नई जैसे पुराने 'प्रेसिडेंसी टाउन्स' में रहते थे, तो वसीयत होने के बावजूद संपत्ति हस्तांतरण के लिए प्रोबेट लेना अनिवार्य था।

यह प्रक्रिया किसी दुःस्वप्न से कम नहीं थी; इसमें न केवल सालों का समय बर्बाद होता था, बल्कि संपत्ति की कुल कीमत का एक बड़ा हिस्सा (लगभग 2 से 5 प्रतिशत तक) भारी-भरकम 'कोर्ट फीस' और वकीलों के खर्च की भेंट चढ़ जाता था। 2025 का यह नया सुधार इसी विसंगति पर प्रहार करता है। अब चाहे आप दिल्ली के दिल में हों, पटना की गलियों में या मुंबई के समंदर किनारे- कानून की नज़र में सब बराबर हैं। सरकार ने इस 'अनिवार्यता' को खत्म कर यह सुनिश्चित किया है कि अब विरासत पाने के लिए आपको अपनी ही जेब खाली नहीं करनी पड़ेगी।

Advertisement

यह ऐतिहासिक बदलाव रातो-रात नहीं आया, बल्कि इसके पीछे न्यायपालिका के दशकों पुराने कानूनी मंथन की गूंज है। इस सुधार की बुनियाद असल में साल 2001 में ही रख दी गई थी, जब 'क्लोरेंस पैस बनाम भारत संघ' मामले में सुप्रीम कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की थी। हालांकि उस वक्त अदालत ने धारा 213 की वैधता को बरकरार रखा, लेकिन साथ ही यह स्पष्ट संकेत भी दिया कि प्रोबेट की अनिवार्यता केवल कुछ विशेष और सीमित परिस्थितियों के लिए ही तर्कसंगत हो सकती है। इस फैसले ने भविष्य के लिए एक नई बहस छेड़ दी थी - कि क्या एक निर्विवाद वसीयत के लिए भी अदालती मुहर हर हाल में जरूरी होनी चाहिए?

साल 2005 में 'मैरी कोचु बनाम थॉमस' जैसे मामलों में अदालतों ने और भी सख्त रुख अपनाया। केरल हाईकोर्ट और बाद के विभिन्न फैसलों में यह स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया कि प्रोबेट की अनिवार्यता का नियम अक्सर न्याय दिलाने के बजाय केवल कानूनी पेचीदगियां और बोझ बढ़ाता है। हाल के वर्षों में तो सुप्रीम कोर्ट ने बार-बार यह दोहराया कि यदि वसीयत की सत्यता पर कोई संदेह नहीं है, तो वारिसों को जबरन अदालती चक्रव्यूह में घसीटना 'ईज ऑफ लिविंग' (सुगम जीवन) के बुनियादी सिद्धांतों के सरासर खिलाफ है। 2025 के इस नए कानून ने असल में न्यायपालिका की इन्हीं प्रगतिशील टिप्पणियों और वर्षों की कानूनी जद्दोजहद को एक 'वैधानिक कवच' प्रदान कर दिया है। संसद ने अदालतों की उस मंशा को कानून का रूप दे दिया है, जो लंबे समय से आम आदमी को वसीयत के नाम पर होने वाली कानूनी प्रताड़ना से बचाना चाहती थी।

धारा 213 के हटने से वसीयत अब एक बेहद शक्तिशाली दस्तावेज बन गई है। अब उत्तराधिकारी प्रोबेट के बिना भी सीधे संपत्ति का म्यूटेशन (दाखिल-खारिज) और बैंक खातों का सेटलमेंट करा सकेंगे। प्रोबेट अब 'अनिवार्य' नहीं है, लेकिन 'अप्रासंगिक' भी नहीं है। भले ही सरकार ने इसे थोपना बंद कर दिया हो, लेकिन इसे बेकार समझना भारी भूल होगी। यदि परिवार में संपत्ति को लेकर विवाद की जरा भी आशंका है, तो प्रोबेट आज भी अदालत में सबसे मजबूत 'सुरक्षा कवच' है। विशेषज्ञों के अनुसार, बड़ी संपत्ति या आपसी अनबन की स्थिति में 'स्वैच्छिक प्रोबेट' कराना एक स्मार्ट मूव है- यह भविष्य के महंगे मुकदमों से बचने का एक सबसे सस्ता और पक्का बीमा है।

निःसंदेह, सरकार का यह कदम संकेत देता है कि भविष्य 'डिजिटल उत्तराधिकार' का है। जब प्रोबेट की अनिवार्यता खत्म होती है, तो लोगों में वसीयत लिखने का उत्साह बढ़ेगा। मध्यम वर्ग के लिए यह सबसे बड़ी राहत है, क्योंकि उनका जीवनभर का निवेश अब कानूनी दांव-पेंच में नहीं फंसेगा। संसद का यह फैसला 'मिनिमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस' का जीवंत उदाहरण है, जिसने वसीयत को अदालती धूल और अंतहीन तारीखों से आजाद कर सीधे हकदारों को सौंप दिया है। यह कदम साहसिक है, लेकिन पाठकों को समझना होगा कि कानून 'सरल' हुआ है, 'खत्म' नहीं। सरकार ने प्रोबेट की अनिवार्यता हटाकर राह तो आसान कर दी है, लेकिन यह सरलीकरण 'सावधानी' का विकल्प नहीं है। अगर जरा सा भी अंदेशा हो कि भविष्य में 'अपनों' के बीच 'सपनों' की संपत्ति को लेकर 'तलवारें' खिंच सकती हैं, तो याद रखिए भविष्य की कानूनी लड़ाइयों से बचने के लिए आज भी दो गवाहों की मौजूदगी में स्पष्ट वसीयत लिखना ही एकमात्र अचूक मंत्र है। कानून ने अनिवार्य प्रोबेट की लाठी छीन ली है, लेकिन समझदारी का छाता आपके हाथ में छोड़ दिया है।

प्रेरणा

विश्वास की जिम्मेदारी और भीतर सोई चेतना का

मनुष्य के जीवन में परिवर्तन अक्सर डांट, सजा या कठोर अनुशासन से नहीं आता, बल्कि तब आता है जब कोई उसके भीतर छिपी क्षमता पर विश्वास करता है और उसे जिम्मेदारी का अवसर देता है। जिम्मेदारी केवल काम सौंपना नहीं होती, यह एक मौन संदेश होती है कि "तुम सक्षम हो, तुम पर भरोसा किया जा सकता है।" यही भरोसा मनुष्य के भीतर सोई हुई चेतना को जगा देता है। इस सत्य को विनोबा भावे के जीवन से जुड़ी एक घटना अत्यंत सरल लेकिन गहराई से उजागर करती है, जो आज के समय में भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी अपने दौर में थी।

भूदान आंदोलन के दिनों में विनोबा भावे देश के अलग-अलग गांवों में जाकर लोगों से संवाद कर रहे थे। उनका उद्देश्य केवल जमीन का दान कराना नहीं था, बल्कि मनुष्य के भीतर दया, उत्तरदायित्व और सामाजिक चेतना को जागृत करना था। वे जहां भी जाते, वहां लोग उन्हें देखने, सुनने और समझने के लिए उमड़ पड़ते। उन्हीं दिनों एक गांव में उनके शिविर के दौरान एक महिला उनसे मिलने आई। उसके चेहरे पर चिंता की गहरी रेखाएं थीं और आंखों में असहायता झलक रही थी। उसने बताया कि उसका बेटा बहुत जिद्दी है, किसी की बात नहीं मानता, हर समय टकराव की स्थिति बना लेता है और परिवार के लिए परेशानी का कारण बन गया है। मां चाहती थी कि विनोबा जी उसे कोई ऐसा उपाय बताएं जिससे उसका बेटा सही रास्ते पर आ जाए।

विनोबा भावे ने महिला की बात बहुत शांति से सुनी। न उन्होंने बेटे को बिगड़ा हुआ कहा, न ही मां को दोषी ठहराया। थोड़ी देर मौन रहने के बाद उन्होंने बस इतना कहा कि वह अपने बेटे को अगले दिन शिविर में भेज दे। महिला को यह उत्तर कुछ अधूरा सा लगा, लेकिन विनोबा जी की आंखों में जो विश्वास था, उसने उसे आश्वस्त कर दिया। उसने बेटे से कहा कि वह बस एक दिन शिविर देखकर आ जाए। बेटे के मन में उत्सुकता जागी और वह अगले दिन शिविर पहुंच गया।

जैसे ही वह युवक शिविर में आया, विनोबा जी ने उससे कोई सवाल-जवाब नहीं किए, न उसके स्वभाव पर कोई टिप्पणी की। इसके बजाय उन्होंने उसे तुरंत एक छोटी-सी जिम्मेदारी सौंप दी। वह जिम्मेदारी दिखने में साधारण थी, लेकिन उसके लिए महत्वपूर्ण थी। उसे कुछ लोगों की व्यवस्था देखने, समय का ध्यान रखने और सहयोग करने को कहा गया। युवक को यह उम्मीद नहीं थी कि आते ही उसे किसी काम के योग्य समझा जाएगा। यह भरोसा उसके लिए नया अनुभव था।

उसने पूरी निष्ठा से वह काम किया। जब जिम्मेदारी पूरी हुई, तो विनोबा जी ने सबके सामने उसकी सराहना की। उन्होंने कहा कि उसने काम बहुत सजगता और समझदारी से किया है। यह प्रशंसा युवक के मन में गहराई तक उतर गई। वर्षों से जो उपेक्षा, डांट और अविश्वास उसने झेला था, उसकी जगह पहली बार सम्मान ने ली। फिर विनोबा जी ने उससे बहुत सहजता से कहा कि अगर वह चाहे तो कुछ दिन और शिविर में रुक सकता है। यह कोई आदेश नहीं था, बल्कि अपनापन भरा आग्रह था। युवक का मन इस वातावरण से जुड़ गया और वह सात दिन रुक गया।

इन सात दिनों में कोई उपदेश नहीं दिए गए, कोई प्रवचन नहीं हुआ। बस हर दिन उसे कुछ न कुछ जिम्मेदारी दी जाती रही। कभी किसी आगंतुक से बात करने की, कभी काम की निगरानी करने की, कभी लोगों को समझाने की। हर जिम्मेदारी के साथ उसका आत्मविश्वास बढ़ता गया। वह खुद को उपयोगी महसूस करने लगा। धीरे-धीरे उसके व्यवहार में ठहराव आने लगा, उसकी भाषा में संयम झलकने लगा और उसके विचारों में गहराई आने लगी। जो युवक पहले हर बात पर उलझ जाता था, वही अब दूसरों की बात ध्यान से सुनने लगा।

सात दिन बाद उसकी मां शिविर में आई। उसने दूर से अपने बेटे को देखा। वह किसी व्यक्ति से बहुत शांत और विनम्र स्वर में बात कर रहा था। मां चुपचाप पास खड़ी हो गई। वह यह सुनकर चौंक गई जब उसका बेटा कह रहा था कि मानव जीवन बहुत मूल्यवान है और उसे सजग रहकर अपने दायित्वों का निर्वहन करना चाहिए। मां को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। यह वही बेटा था, जिसकी जिद और क्रोध ने उसे थका दिया था। मां भावुक होकर विनोबा जी के पास गई और उनसे पूछा कि उन्होंने ऐसा क्या किया कि उसका बेटा इतने कम समय में बदल गया। विनोबा जी ने मुस्कराते हुए कहा कि उन्होंने कुछ भी नया नहीं किया। उन्होंने सिर्फ उसके बेटे को जिम्मेदारी दी और उस पर भरोसा किया। उन्होंने बताया कि उसके भीतर ये सारे गुण पहले से मौजूद थे, बस उन्हें प्रकट होने का अवसर नहीं मिला था। जब उसे जिम्मेदारी मिली, तो वह खुद ही परिपक्व होता चला गया।

यह घटना हमें यह सिखाती है कि मनुष्य को बदलने का सबसे सशक्त तरीका उसे महत्व देना है। समाज में हम अक्सर लोगों को उनकी कमियों से पहचानते हैं, लेकिन उनकी क्षमताओं पर ध्यान नहीं देते। जब किसी को यह अहसास कराया जाता है कि वह समाज के लिए उपयोगी है, तो उसके भीतर सकारात्मक परिवर्तन स्वाभाविक रूप से होने लगता है। जिम्मेदारी मनुष्य को केवल काम नहीं सिखाती, बल्कि उसे जीवन का अर्थ भी समझाती है।

आज के समय में, जब परिवार, समाज और संस्थान युवाओं की दिशा को लेकर चिंतित हैं, यह कहानी एक आईना बनकर सामने आती है। आदेश, नियंत्रण और दंड की जगह अगर विश्वास, जिम्मेदारी और सम्मान दिया जाए, तो परिवर्तन न केवल संभव है, बल्कि स्थायी भी होता है। विनोबा भावे का यह दृष्टिकोण हमें याद दिलाता है कि हर व्यक्ति के भीतर एक बेहतर मनुष्य छिपा होता है, जरूरत है तो बस उसे जिम्मेदारी के प्रकाश में आने देने की।

अरावली की चिन्ता : नारे से आगे, अस्तित्व की लड़ाई

अरावली पर्वत श्रृंखला की नई परिभाषा को लेकर उठा विवाद अब जन-आन्दोलन का रूप ले रहा है। इसी के अन्तर्गत अरावली बचाओ की चिन्ता-यह केवल भावनात्मक आह्वान नहीं, बल्कि भारत के पर्यावरणीय भविष्य की जीवनरेखा है। गुजरात से लेकर दिल्ली तक फैली अरावली पर्वतमाला पृथ्वी की प्राचीनतम पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है। यह पर्वत केवल पत्थरों का ढेर नहीं, बल्कि जल, जंगल, जैव-विविधता, जलवायु संतुलन और मानव जीवन के लिए एक प्राकृतिक कवच है। आज जब खनन, शहरीकरण और विकास की आड़ में इस पर्वतमाला को टुकड़ों में बांटने की कोशिशें हो रही हैं, तब यह प्रश्न केवल पर्यावरण का नहीं, बल्कि मनुष्य जाति के अस्तित्व का बन गया है। हमें उम्मीद करनी चाहिए कि अरावली को लेकर सरकारों की चिन्ता व्यर्थ न जाये, कोई सकारात्मक रंग लाए। पहाड़ी इलाकों के खनन, उपेक्षा एवं लोभवृत्ति पर विचार करना होगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सरकारों की उपेक्षा की वजह से अरावली के बड़े हिस्से का खनन ही नहीं हुआ, आमजन एवं प्रकृति-पर्यावरण रक्षा का यह कवच ध्वस्त भी हुआ है। अरावली की आयु भूगर्भीय दृष्टि से करोड़ों वर्षों में आंकी जाती है। यह हिमालय से भी पुरानी है। यही कारण है कि अरावली का स्वरूप अपेक्षाकृत निचला और क्षरित दिखाई देता है, किंतु इसका महत्व कहीं अधिक गहरा है। राजस्थान, हरियाणा, गुजरात और दिल्ली के बड़े हिस्सों में वर्षा जल का संचयन, भूजल रिचार्ज और मरुस्थलीकरण पर नियंत्रण अरावली के कारण ही संभव है। थार मरुस्थल को पूर्व की ओर बढ़ने से रोकने में अरावली की भूमिका किसी अदृश्य दीवार की तरह है। आज के समय में पर्यावरणीय संकट बहुआयामी हो चुका है-जल संकट, वायु प्रदूषण, जैव-विविधता का क्षय, जलवायु परिवर्तन और अनियंत्रित शहरी विस्तार। इन सभी चुनौतियों का एक साझा समाधान अरावली जैसी प्राकृतिक संरचनाओं का संरक्षण है। दुर्भाग्यवश, खनन और निर्माण गतिविधियों ने इस पर्वतमाला को गहरे घाव दिए हैं। पत्थर, संगमरमर और अन्य खनिजों के लिए की जा रही अंधाधुंध खुदाई ने न केवल पहाड़ों को खोखला किया है, बल्कि आसपास के गांवों, नदियों और जंगलों को भी संकट में डाल दिया है। लगातार संकट से घिर रही अरावली को बचाने के लिये एक याचिका 1985 से न्यायालय में विचाराधीन है। हालांकि इस याचिका का ही नतीजा है कि अरावली का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा संरक्षित श्रेणी में आता है। वैसे अब समय आ गया है कि अरावली को पूरी तरह से खनन-मुक्त रखने का फैसला किया जाये। अब भी खनन जारी रहा तो उससे होने वाले लाभ से कई गुणा ज्यादा कीमत हमें पर्यावरण के मोर्चे पर चुकानी पडेगी।

सुप्रीम कोर्ट ने समय-समय पर अरावली के संरक्षण को लेकर गंभीर टिप्पणियां की हैं। न्यायालय का दृष्टिकोण स्पष्ट रहा है कि पर्यावरणीय संतुलन को नुकसान पहुंचाने वाली गतिविधियों पर रोक लगनी चाहिए और विकास के नाम पर प्रकृति के विनाश को वैधता नहीं दी जा सकती। इसके बावजूद, विभिन्न स्तरों पर नियमों की व्याख्या और पुनर्व्याख्या के जरिए खनन को अनुमति देने के प्रयास होते रहे हैं। विशेष रूप से "100 मीटर ऊंचाई" जैसे मानदंडों के आधार पर पर्वतों को परिभाषित करना और उससे नीचे की संरचनाओं को खनन योग्य मानना एक खतरनाक प्रवृत्ति है। यह तर्क न केवल वैज्ञानिक दृष्टि से कमजोर है, बल्कि पर्यावरणीय समझ के भी विपरीत है। खनन की वजह से अरावली की छलनी हो चुकी है।

पर्वत केवल ऊंचाई से नहीं पहचाने जाते, बल्कि उनके भूगर्भीय ढांचे, जलधारण क्षमता और पारिस्थितिकी तंत्र से उनकी पहचान होती है। 100 मीटर से कम ऊंचाई वाले पहाड़ भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने ऊंचे पर्वत। यदि इस तर्क को स्वीकार कर लिया जाए, तो धीरे-धीरे पूरी अरावली को छोटे-छोटे हिस्सों में बांटकर समाप्त किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण अल्पकालिक आर्थिक लाभ को दीर्घकालिक पर्यावरणीय सुरक्षा से ऊपर रखता है। राजस्थान सरकार की कुछ पहलें संरक्षण की दिशा में सराहनीय कही जा सकती हैं, जैसे वन क्षेत्रों की अधिसूचना, अवैध खनन पर कार्रवाई और पर्यावरणीय स्वीकृतियों की सख्ती। किंतु इन प्रयासों के समानांतर ऐसी नीतिगत ढील भी दिखाई देती है, जो खनन और रियल एस्टेट गतिविधियों को बढ़ावा देती हैं। केंद्र सरकार द्वारा प्रस्तुत तथ्यों और आंकड़ों के आधार पर यह तर्क दिया जाता है कि नियंत्रित खनन से विकास संभव है। परंतु अनुभव बताता है कि "नियंत्रित" शब्द व्यवहार में अक्सर अर्थहीन हो जाता है। भले ही वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव स्पष्टीकरण दे रहे हैं कि सिर्फ 277 वर्ग किमी में ही खनन की अनुमति है। उन्होंने आश्वस्त किया है कि नई परिभाषा से खनन बढ़ेगा नहीं, बल्कि अवैध खनन रूकेगा।

विकास और पर्यावरण को आमने-सामने खड़ा करना एक पुरानी भूल है। सच्चा विकास वही है जो प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठाकर हो। अरावली का संरक्षण विकास विरोधी कदम नहीं, बल्कि दीर्घकालिक विकास की शर्त है। जिन क्षेत्रों में अरावली को नुकसान पहुंचा है, वहां जल स्तर गिरा है, तापमान बढ़ा है और जैव-विविधता घट गई है। दिल्ली-एनसीआर की जहरीली हवा और जल संकट में अरावली के क्षरण की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अरावली में वन्यजीव लगभग खत्म होने को है। खनन के विकल्प पर विचार करना होगा। खनन मुख्यत पत्थर के लिये होता है और पत्थरों से सुन्दर घर बनाने की परम्परा सदियों से चली आ रही है, इस परम्परा पर नये सिरे से चिन्तन करने की अपेक्षा है।

अभियान

माया का प्रहार और नारद का आत्मबोध

देवर्षि नारद, जिनके कंठ से सदा हरि-नाम का अमृत बहता है, जिनकी वीणा के स्वर तीनों लोकों में भक्ति का संचार करते हैं, वही नारद जब माया के प्रभाव में आते हैं, तो यह प्रसंग केवल एक कथा नहीं रह जाता, बल्कि चेतना को झकझोर देने वाला दर्पण बन जाता है। यह वही क्षण है, जब ज्ञान, तप और सिद्धि के बावजूद अभिमान की एक सूक्ष्म रेखा साधक को भी भ्रम के गर्त में खींच ले जाती है।

श्रीहरि के वचनों से नारद मुनि अति प्रसन्न थे। उनके मन में यह दृढ़ हो चुका था कि अब विश्वमोहिनी उन्हें प्राप्त होकर रहेगी। यद्यपि भगवान विष्णु स्वयं उनके सामने विराजमान थे, किंतु नारद का चित्त अब प्रभु में नहीं, बल्कि मोह की कल्पना में रम चुका था। जैसे कोई प्यासा व्यक्ति मृगतृष्णा को ही जल समझ बैठता है, वैसे ही नारद मुनि माया की छाया को ही सत्य मान बैठे। श्रीहरि की वाणी अत्यंत स्पष्ट थी, किंतु माया से आच्छादित बुद्धि उस स्पष्टता को भी पढ़ नहीं सकी।

भगवान विष्णु ने रोगी और वैद्य का उदाहरण देकर नारद को समझाने का प्रयास किया था। उन्होंने संकेत दिया था कि जो हितकारी होता है, वह कभी अहित की अनुमति नहीं देता। किंतु नारद मुनि उस संकेत को सुनकर भी नहीं समझ पाए। कारण यह नहीं था कि वे अज्ञानी थे, कारण यह था कि माया जब विवेक पर अधिकार कर लेती है, तब ज्ञान भी मौन हो जाता है। यही कारण है कि तुलसीदास जी कहते हैं कि माया के वश में पड़ा मुनि भी मूढ़ हो जाता है और हरि की गूढ़ वाणी को नहीं समझ पाता।

पूर्ण आश्वस्त होकर नारद मुनि स्वयंवर भूमि की ओर प्रस्थान कर गए। वहां का दृश्य अत्यंत भव्य था। देश-विदेश से आए राजा, राजकुमार, अपने-अपने आभूषणों और पराक्रम के तेज से सभा को आलोकित कर रहे थे। स्वर्ण सिंहासन, रत्नजड़ित वस्त्र और सुगंधित वातावरण में स्वयंवर की प्रतीक्षा हो रही थी। किंतु इस भव्यता के बीच नारद मुनि के मन में एक अलग ही संसार बस रहा था। उन्हें प्रतीत हो रहा था कि इन सबमें सबसे अनुपम, सबसे सुंदर वही हैं। उनका हृदय गर्व से भर उठा था। उन्हें लग रहा था कि इन राजाओं का यहां आना व्यर्थ है, क्योंकि विश्वमोहिनी की दृष्टि पड़ते ही वह केवल नारद को ही देखेगी।

नारद मुनि के मन में उठता यह सौंदर्य-बोध वास्तव में आत्ममुग्धता का बीज था। उन्हें यह भान ही नहीं था कि भगवान विष्णु की लीला कुछ और ही दिशा में चल रही है। श्रीहरि ने नारद को ऐसा रूप दे दिया था, जो संसार की दृष्टि में संत का था, किंतु दिव्य दृष्टि में वानर का। यह रूप केवल श्रीहरि और शिवजी के गण ही देख पा रहे थे। अन्य सभी के लिए नारद मुनि वही दिव्य तेजस्वी ऋषि थे, किंतु स्वयं नारद अपने आपको अत्यंत सुंदर समझ रहे थे। यही माया की सबसे गूढ़ चाल है, कि वह व्यक्ति को उसके ही भ्रम में कैद कर देती है। उसी सभा में शिवजी के दो गण ब्राह्मण वेश में उपस्थित थे। वे भगवान की लीला से पूर्णतः परिचित थे। उनका स्वभाव विनोदी था, और वे इस दिव्य नाटक का आनंद ले रहे थे। वे जानबूझकर नारद मुनि के पास आ बैठे और उनके कानों में मीठे, किंतु व्यंग्य से भरे शब्द कहने लगे। वे बार-बार यह दोहराते कि भगवान ने मुनि को अद्भुत सुंदरता दी है, कि राजकुमारी इन्हें देखते ही मोहित हो जाएगी। उनके शब्दों में 'हरि' का प्रयोग था, जो सुनने में भगवान विष्णु का संकेत देता था, किंतु वास्तविक अर्थ वानर था। यही भाषा की सूक्ष्मता और लीला की गहराई थी।

नारद मुनि उन वचनों को प्रशंसा समझकर और अधिक गर्व से भर गए। उन्हें तनिक भी आभास नहीं हुआ कि उन पर व्यंग्य किया जा रहा है। अभिमान ने उनके विवेक पर ऐसा आवरण डाल दिया था कि वे संकेत और शब्दार्थ के अंतर को समझ ही नहीं पा रहे थे। यही वह क्षण था, जब महान ज्ञानी भी स्वयं का मूल्यांकन खो बैठता है।

अब सभा में वह क्षण आ पहुंचा, जब विश्वमोहिनी का प्रवेश होने वाला था। वातावरण में उत्सुकता और रोमांच भर गया। सभी की दृष्टियां द्वार की ओर टिक गईं। नारद मुनि का हृदय तीव्र गति से धड़क रहा था, किंतु वह धड़कन प्रेम की नहीं, अपेक्षा और अहंकार की थी। उन्हें पूरा विश्वास था कि वरमाला उनके गले में ही पड़ेगी। वे यह नहीं जानते थे कि श्रीहरि की लीला में विश्वास और परिणाम के बीच अक्सर परीक्षा छिपी होती है।

यह कथा यहीं समाप्त नहीं होती, बल्कि यहीं से इसका सबसे गहन अध्याय आरंभ होता है। क्योंकि आगे नारद मुनि को न केवल उपहास का सामना करना है, बल्कि आत्मबोध की उस अग्नि से भी गुजरना है, जिसमें अहंकार जलकर भस्म हो जाता है और भक्ति अपने शुद्ध स्वरूप में प्रकट होती है। यह कथा हमें यह सिखाती है कि माया केवल सांसारिक को ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक को भी भ्रमित कर सकती है। और जब तक कृपा के साथ विवेक नहीं जुड़ता, तब तक साधना भी परीक्षा बन जाती है। आगे की लीला में यही सत्य पूर्ण रूप से प्रकट होने वाला है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में अहमदाबाद में क्रीड़ा भारती के अखिल भारतीय अधिवेशन का शुभारंभ

▸▸ भारत में प्राचीन काल से खेल हमारी संस्कृति और जीवन शैली का एक अहम हिस्सा रहा है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ तीन दिवसीय अधिवेशन में देश भर से क्रीड़ा भारती संस्था से जुड़े खिलाड़ी और स्वयंसेवक रहेंगे मौजूद

▸▸ मुख्यमंत्री ने क्रीड़ा ज्योत स्मारिका पुस्तक का विमोचन किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शुक्रवार को अहमदाबाद में क्रीड़ा भारती के अखिल भारतीय अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत को राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी मिलने और इन खेलों के आयोजन के लिए अहमदाबाद को चुने जाने के गौरवपूर्ण अवसर पर क्रीड़ा भारती का अधिवेशन अहमदाबाद में आयोजित हुआ है, इससे खेल क्षेत्र को एक नई दिशा मिलेगी।

उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकास होना चाहिए और इसमें खेलों का भी महत्व है। मुख्यमंत्री ने इस संदर्भ में कहा कि प्रधानमंत्री ने ऐसे उदार भाव के साथ गुजरात में खेल संस्कृति विकसित करने के लिए 2010 से खेल महाकुंभ की शुरुआत की है। खेल महाकुंभ के चलते राज्य के ग्रामीण इलाकों तक खेलों के प्रति रुचि बढ़ी है और खेल महाकुंभ में भाग लेने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

उन्होंने कहा कि 2010 में 16 लाख लोगों की सहभागिता से शुरू हुए खेल महाकुंभ के 2025 के संस्करण में 72 लाख लोगों ने हिस्सा लिया है।

इतना ही नहीं, खेल महाकुंभ की सफलता के चलते गुजरात के लगभग 16 प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में राज्य और देश का प्रतिनिधित्व किया है।

मुख्यमंत्री ने प्राचीन ग्रंथों में खेलों के उल्लेख की चर्चा करते हुए कहा कि भारत में प्राचीन काल से ही खेल हमारी संस्कृति और जीवन शैली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। हजारों वर्ष पहले लिखे गए ग्रंथों में भी 64 विद्याओं के माध्यम से व्यक्ति के कौशल विकास की बात की गई है, उनमें से कई विद्याओं के खेलों के साथ जुड़े होने का उल्लेख है।

उन्होंने कहा कि हमारे ग्रंथों में इसका उल्लेख है कि भगवान श्री कृष्ण बचपन में लकड़ी और गेंद का खेल खेलते थे। इसके अलावा, गुरु द्रोणाचार्य के गुरुकुल में कौरवों और पांडवों के बीच तीरंदाजी और गदा युद्ध जैसे खेलों का भी वर्णन है। यजुर्वेद में शारीरिक प्रशिक्षण, अथर्ववेद में स्वस्थ शरीर और समाज को राज्य की रीढ़ बताया गया है। यह सब खेल भावना का प्रतिबिंब है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने क्रीड़ा भारती के पांचवें अधिवेशन में देश भर से आए खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों और स्वयंसेवकों का गुजरात की धरती पर स्वागत करते हुए कहा कि क्रीड़ा भारती संस्था भारतीय संस्कृति में उल्लिखित ऐसे अनेक खेलों के संरक्षण के लिए खेलकूद के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे रही है। उन्होने कहा कि क्रीड़ा भारती देश प्रेम के संस्कार सिंचन से केवल खिलाड़ी नहीं, बल्कि भविष्य के नागरिक भी तैयार करने का काम करती है।

उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के मार्गदर्शन में राज्य सरकार ओलंपिक के भाग के रूप में आगामी समय में 5 विश्व स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए कटिबद्ध है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने क्रीड़ा ज्योत स्मारिका पुस्तक का विमोचन किया।

अहमदाबाद के श्री कल्कि तीर्थधाम, प्रेरणापीठ में आयोजित तीन दिवसीय अधिवेशन में देश भर से क्रीड़ा भारती संस्था से जुड़े खिलाड़ी और स्वयंसेवक उपस्थित रहेंगे।

क्रीड़ा भारती के गुजरात प्रदेश अध्यक्ष श्री विवेकभाई पटेल ने स्वागत भाषण में अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी का स्वागत किया। इसके अलावा, संस्था के अखिल भारतीय महामंत्री श्री राज जी चौधरी ने अधिवेशन के विषय सहित क्रीड़ा भारती संस्था के बारे में विस्तार से जानकारी दी। अधिवेशन में क्रीड़ा भारती के अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री गोपाल जी सैनी, मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री और क्रीड़ा भारती के कार्यकारी अध्यक्ष श्री चैतन्य जी कश्यप, गुजरात प्रदेश उपाध्यक्ष श्री मिनेषभाई, महानगर अध्यक्ष श्री आनंदभाई, गुजरात प्रदेश मंत्री श्री चिरागभाई और देश भर के क्रीड़ा भारती से जुड़े लोग मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :

▸▸ क्रीड़ा भारती खेलों के संरक्षण के लिए खेलकूद के जरिए राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाली संस्था है

▸▸ राज्य सरकार ओलंपिक 2036 रन-अप के हिस्से के रूप में आगामी समय में 5 विश्व स्तरीय खेलों के आयोजन के लिए कटिबद्ध है

▸▸ प्रधानमंत्री का लक्ष्य कि विकसित राष्ट्र के निर्माण के लिए प्रत्येक नागरिक स्वस्थ और फिट रहे, गुजरात में खेल महाकुंभ के जरिए साकार हुआ है

मण्डल रेल प्रबंधक अहमदाबाद द्वारा साबरमती कलोल-महेसाणा-पालनपुर सेक्शन का निरीक्षण

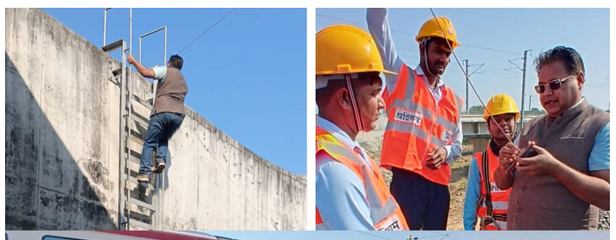

(जीएनएस)। गुजरात में रेल संरक्षा एवं विकास की दिशा में निरंतर अग्रसर भारतीय रेलवे द्वारा रेल संरक्षा तथा आधारभूत ढांचे के सुदृढ़ीकरण के लिए लगातार कार्य किए जा रहे हैं। इसी क्रम में दिनांक 26.12.2025 को पश्चिम रेलवे, अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (DRM) श्री वेद प्रकाश ने वरिष्ठ रेल अधिकारियों के साथ साबरमती–कलोल–महेसाणा–पालनपुर रेल खंड का विस्तृत निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान साबरमती से पालनपुर के बीच रेलवे ट्रैक, लेवल क्रॉसिंग, छोटे एवं प्रमुख पुलों, पॉइंट्स एवं क्रॉसिंग, सेक्शन के कव्र्स, क्रॉसिंग तथा विभिन्न संरक्षा मानकों की गहन समीक्षा की गई और संबंधित अधिकारियों के साथ संरक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई।

निरीक्षण के दौरान साबरमती–कलोल खंड के बीच स्थित लेवल क्रॉसिंग संख्या 240 (SPL) पर चल रहे मरम्मत एवं संरक्षा कार्यों की प्रगति का जायजा लिया गया। साथ ही कलोल रेलवे स्टेशन पर अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत प्रगति पर चल रहे पुनर्विकास कार्यों का निरीक्षण किया गया। डांगरवा यार्ड में पॉइंट्स एवं क्रॉसिंग (पीएंडसी) तथा स्विच एक्सपेंशन जॉइंट्स (एसईजे) का निरीक्षण किया गया तथा कर्व संख्या 116 की संरक्षा जांच की गई। इसके अतिरिक्त प्रमुख पुल संख्या 965 DN (कॉम्पोज़िट गर्डर) का निरीक्षण किया गया। खारी नदी पर कार्यरत पी-वे गैंग का निरीक्षण करते हुए मंडल रेल प्रबंधक ने गैंगमैनों से संवाद किया और उपयोग किए जा रहे सेफ्टी उपकरणों की जानकारी ली।

महेसाणा स्टेशन के निरीक्षण के दौरान आरपीएफ पोस्ट की व्यवस्थाओं की समीक्षा की गई तथा रेलवे हेल्थ यूनिट का निरीक्षण कर उपलब्ध चिकित्सीय सुविधाओं का जायजा लिया गया। इसके साथ ही रेलवे कॉलोनी की सुविधाओं का अवलोकन किया गया और स्टेशन परिसर में नव विकसित पार्क का भी निरीक्षण किया गया। उंझा में रोड अंडर ब्रिज का निरीक्षण कर संरक्षा एवं यात्री सुविधाओं का आकलन किया गया, साथ ही सिद्धपुर में रेलवे कॉलोनी का निरीक्षण किया गया। कलोल, महेसाणा एवं पालनपुर रेलवे स्टेशनों पर मास्टर केबिन, बुकिंग काउंटर, फुट ओवर ब्रिज, प्लेटफॉर्म, वेटिंग रूम सहित विभिन्न आधारभूत संरचना कार्यों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक ने अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत विकसित किए जा रहे महेसाणा, पालनपुर एवं साबरमती स्टेशनों के पुनर्विकास कार्यों की प्रगति का भी जायजा लिया।

हेबतपुर रेलवे फाटक दिनांक 27.12.2025 को रात्रि 22:00 बजे से दिनांक 28.12.2025 को सायं 18:00 बजे तक बंद रहेगा

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत फाटक संख्या–11 (हेबतपुर रेलवे फाटक), रेलवे किमी 511/02-04, जो ब्लॉक स्टेशन आंबली रोड–चांदलोडिया के बीच स्थित है, पर आंबली रोड एवं चांदलोडिया स्टेशनों पर नॉन इंटरलॉकिंग कार्य किया जाना है।

उक्त कार्य के कारण हेबतपुर रेलवे फाटक दिनांक 27.12.2025 को रात्रि 22:00 बजे से दिनांक 28.12.2025 को सायं 18:00 बजे तक (कुल 20 घंटे) यातायात हेतु पूर्णतः बंद रहेगा।

इस अवधि के दौरान सड़क यातायात को शोला ब्रिज, शिलज ब्रिज एवं सिम्स ब्रिज के माध्यम से डायवर्ट किया जाएगा। रेलवे प्रशासन आम नागरिकों एवं वाहन चालकों से अनुरोध करता है कि वे असुविधा से बचने हेतु वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करें तथा इस आवश्यक रेल कार्य में सहयोग प्रदान करें।

इंजीनियरिंग कार्य के चलते कानालुस पोरबंदर और पोरबंदर–कानालुस लोकल ट्रेनों का संचालन 25 जनवरी तक गोप जाम स्टेशन से होगा

(जीएनएस)। राजकोट मंडल के कानालुस स्टेशन पर प्लेटफॉर्म मरम्मत कार्य की वजह से 25 जनवरी, 2026 तक कानालुस–पोरबंदर और पोरबंदर–कानालुस लोकल ट्रेनों का परिचालन आंशिक रूप से प्रभावित रहेगा। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार, प्रभावित ट्रेनों का विवरण इस प्रकार है:

आंशिक रूप से प्रभावित ट्रेनें

ट्रेन संख्या 59206 पोरबंदर–कानालुस लोकल

यह ट्रेन 31 दिसंबर, 2025 से 25 जनवरी, 2026 तक पोरबंदर से प्रस्थान कर गोपजाम जाएगी तथा गोपजाम–कानालुस खंड के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

ट्रेन संख्या 59205 कानालुस–पोरबंदर लोकल

यह ट्रेन 31 दिसंबर, 2025 से 25 जनवरी, 2026 तक कानालुस की बजाय गोपजाम स्टेशन से चलेगी और कानालुस-गोपजाम खंड के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

यात्रियों से निवेदन

रेल यात्रियों से अनुरोध है कि वे उपरोक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए अपनी यात्रा की योजना बनाएं। ट्रेनों के परिचालन से संबंधित नवीनतम जानकारी के लिए यात्री वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन करें, ताकि किसी प्रकार की असुविधा न हो।

कोल इंडिया को मिला नया नेतृत्व ढांचा, बी. साईराम को सौंपी गई सीईओ की जिम्मेदारी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी सार्वजनिक क्षेत्र की कोयला उत्पादक कंपनी कोल इंडिया लिमिटेड में शीर्ष स्तर पर अहम प्रशासनिक फैसला लिया गया है। कंपनी के निदेशक मंडल ने चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक बी. साईराम को मुख्य कार्यपालक अधिकारी यानी सीईओ नियुक्त करने का निर्णय लिया है। यह फैसला शुक्रवार को आयोजित बोर्ड बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया, जिसके बाद कंपनी के प्रबंधन ढांचे में एक महत्वपूर्ण बदलाव सामने आया है। कोल इंडिया की ओर से जारी जानकारी के मुताबिक, अब बी. साईराम सीएमडी और सीईओ—दोनों भूमिकाओं की जिम्मेदारी एक साथ निभाएंगे। कंपनी का मानना है कि इस दोहरी जिम्मेदारी से निर्णय लेने की प्रक्रिया अधिक तेज और प्रभावी होगी तथा शीर्ष स्तर पर समन्वय बेहतर तरीके से स्थापित किया जा सकेगा। प्रबंधन को उम्मीद है कि इससे रणनीतिक योजनाओं के क्रियान्वयन में भी मजबूती आएगी। यह नियुक्ति ऐसे समय में की गई है, जब कोल इंडिया वित्त वर्ष 2025-26 के लिए महत्वाकांक्षी उत्पादन लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में काम कर रही है।

राजकोट में जीआईडीसी द्वारा मेडिकल डिवाइस पार्क की महत्वाकांक्षी पहल, गुजरात के तेजी से विकसित हो रहे चिकित्सा क्षेत्र को नई गति

वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) – कच्छ एवं सौराष्ट्र के आयोजन से वैश्विक निवेश तथा आधुनिक मेडिकल डिवाइस इकोसिस्टम को मिलेगा वेग

(जीएनएस)। गांधीनगर, 26 दिसंबर : गुजरात औद्योगिक विकास निगम (जीआईडीसी) द्वारा राजकोट जिले के नागलपर में एक नया, क्षेत्र-विशिष्ट मेडिकल डिवाइस पार्क स्थापित करने की महत्वाकांक्षी पहल की गई है। इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य चिकित्सा उपकरण उद्योग के लिए एक एकीकृत एवं व्यापक इकोसिस्टम विकसित करना है; जो अनुसंधान, उत्पादन, गुणवत्ता परीक्षण तथा वैश्विक निर्यात को सुदृढ़ आधार प्रदान करेगा।

नागलपर में मेडिकल डिवाइस पार्क की स्थापना

जीआईडीसी द्वारा प्रस्तावित नागलपुर मेडिकल डिवाइस पार्क लगभग 336 एकड़ क्षेत्र में विकसित किया जाएगा। इस पार्क को 'एंड-टू-एंड' इकोसिस्टम के रूप में डिजाइन किया गया है; जिसमें प्रारंभिक अनुसंधान से लेकर उत्पादन, परीक्षण तथा अंत में अंतरराष्ट्रीय बाजार में निर्यात तक की समग्र प्रक्रिया सरल व कार्यक्षम बनेगी।

स्थानीय लाभ तथा रणनीतिक कनेक्टिविटी

नागलपुर लॉजिस्टिक्स तथा कनेक्टिविटी की दृष्टि से अत्यंत रणनीतिक है। यह क्षेत्र पीपावाव बंदरगाह से लगभग 125 किलोमीटर, कंडला बंदरगाह से 198 किलोमीटर और मुंद्रा बंदरगाह से 243 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। राजकोट अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से सौराष्ट्र अंचल को मुंबई, दिल्ली तथा बेंगलुरू जैसे देश के प्रमुख शहरों के साथ सीधी एयर कनेक्टिविटी प्राप्त है। इसके अतिरिक्त; यह मेडिकल डिवाइस पार्क राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 27 (एनएच-27) से केवल 9 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है; जो अहमदाबाद, जयपुर एवं दिल्ली जैसे महत्वपूर्ण शहरों को जोड़ने वाला प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग है।

प्लग-एंड-प्ले ढाँचागत सुविधाएँ

उद्योगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर नागलपुर मेडिकल डिवाइस पार्क में आधुनिक तथा तैयार-उपयोग (प्लग-एंड-प्ले) के लिए ढाँचागत सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएंगी। इनमें दैनिक 3.5 मिलियन लीटर (एमएलडी) क्षमता वाली विश्वसनीय जलापूर्ति व्यवस्था, ठोस कूड़ा प्रबंधन सुविधा तथा सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटपी) शामिल हैं। निर्बाध/निरंतर विद्युत आपूर्ति के लिए 66 केवी सबस्टेशन हेतु भूमि आरक्षित रखी गई है। साथ ही; कार्यक्षम सप्लाई चेन सुनिश्चित करने के लिए कॉमन वेयरहाउस तथा लॉजिस्टिक्स सेंटर का आयोजन किया गया है।

नागलपुर मेडिकल डिवाइस पार्क का विकास भारत के तेजी से विकसित हो रहे मेडिकल डिवाइस उत्पादन क्षेत्र में गुजरात को अग्रसर राज्य के रूप में स्थापित करने की राज्य सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है।

वीजीआरसी राजकोट : निवेश का रणनीतिक मंच

राजकोट में आयोजित होने वाली आगामी वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) – कच्छ एवं सौराष्ट्र नागलपुर स्थित मेडिकल डिवाइस पार्क द्वारा सृजित होने वाले निवेश के विशाल अवसरों को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने के लिए एक सशक्त एवं गतिशील प्लेटफॉर्म प्रदान करेगी। ऑर्थोपैडिक तथा सर्जिकल डिवाइस मैन्युफैक्चरिंग के लिए विख्यात राजकोट में आयोजित होने वाली इस कॉन्फ्रेंस के दौरान इंजीनियरिंग, बंदरगाहों तथा लॉजिस्टिक्स और कृषि एवं फूड प्रोसेसिंग जैसे क्षेत्रों में कच्छ-सौराष्ट्र अंचलों की क्षमताओं को विशेष रूप से उजागर किया जाएगा। जनवरी-2026 के दौरान आयोजित होने वाली वीजीआरसी-राजकोट में वैश्विक निवेशकों, उद्योग अग्रणियों और वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों के साथ सीधे संवाद द्वारा रणनीतिक भागीदारियाँ विकसित करने, भूमि आवंटन प्राप्त करने और भारत के मेडिकल डिवाइस बाजार में विशिष्ट पहचान स्थापित करने के स्वर्णिम अवसर उपलब्ध होंगे।

सिख गुरुओं का बलिदान धर्म, मानवता और राष्ट्र रक्षा की अमर मिसाल: योगी आदित्यनाथ

लखनऊ। वीर बाल दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सिख गुरुओं और गुरु गोबिन्द सिंह के साहिबजादों के अद्वितीय बलिदान को नमन करते हुए कहा कि उनका त्याग केवल सिख समाज ही नहीं, बल्कि समूची मानवता और राष्ट्र के लिए प्रेरणास्रोत है। मुख्यमंत्री आवास पर इस अवसर को श्रद्धा, सम्मान और आध्यात्मिक भाव के साथ मनाया गया, जहां साहिबजादों की स्मृति में भव्य कीर्तन समागम का आयोजन किया गया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि गुरु गोबिन्द सिंह के चारों साहिबजादों—बाबा अजित सिंह, बाबा जुझार सिंह, बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह—का बलिदान भारतीय इतिहास का वह अध्याय है, जो धर्म की रक्षा, अन्याय के प्रतिरोध और मानव मूल्यों की स्थापना का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने कहा कि सिख गुरुओं का जीवन संघर्ष, साधना और शौर्य का ऐसा संगम है, जिसने आने वाली पीढ़ियों को सत्य, साहस और सेवा का मार्ग दिखाया। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि सिख गुरु परंपरा भक्ति और शक्ति के अनुपम तेज का प्रतीक है। उस कालखंड में आधुनिक साधनों का अभाव था, लेकिन आत्मबल, साधना और संकल्प के सहारे गुरुओं ने न केवल अपने अनुयायियों को जागृत किया, बल्कि समाज को अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध खड़े होने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि जीवन की गति को प्रगति की दिशा में ले जाना ही गुरु परंपरा का संदेश है, जबकि दुर्गति विनाश का मार्ग है।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि वीर बाल दिवस गुरु परंपरा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर है। गुरु गोबिन्द सिंह के 550वें प्रकाश पर्व के अवसर पर यह संकल्प लिया गया था कि साहिबजादों के बलिदान को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान और स्मरण दिया जाएगा, ताकि देश की नई पीढ़ी अपने गौरवशाली इतिहास से परिचित हो सके और उससे प्रेरणा ले सके।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने देश के सिख समाज की भावनाओं को गहराई से समझते हुए वीर बाल दिवस को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का निर्णय लिया। इससे साहिबजादों के शौर्य और त्याग की गाथा देश के कोने-कोने तक पहुंची है और युवाओं को राष्ट्रभक्ति तथा कर्तव्यबोध का संदेश मिल रहा है। उन्होंने कहा कि सिख गुरुओं और साहिबजादों ने पाखंड, अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध निर्भीक होकर आवाज उठाई।

सप्ताह के दौरान सोना वायदा में 3576 रुपये और चांदी वायदा में 20225 रुपये का बड़ा ऊछाल: क्रूड ऑयल वायदा में 158 रुपये की तेजी

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 370942.83 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 3685177.27 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ साप्ताहिक टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 295057.43 करोड़ रुपये का हुआ साप्ताहिक कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 34492 पॉइंट के स्तर पर

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 19 से 24 दिसंबर के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस में 4056267.64 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 370942.83 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 3685177.27 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का जनवरी वायदा 34492 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 35387.2 करोड़ रुपये का हुआ।

आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 295057.43 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 134021 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 138676 रुपये के ऑल टाइम हाई और 133555 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 134521 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 3576 रुपये या 2.66 फीसदी के ऊछाल के साथ 138097 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-गिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 3000 रुपये या 2.75 फीसदी की तेजी के साथ 112051 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-पेटल जनवरी वायदा 357 रुपये या 2.62 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट सप्ताह के अंत में 13986 रुपये प्रति 1 ग्राम पर आ गया। सोना-मिनी जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 132252 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 136888 रुपये के उच्च और 131803 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 3420 रुपये या 2.58 फीसदी की तेजी के संग 136104 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन जनवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सप्ताह के आरंभ में 134445 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 139993 रुपये के उच्च और 134120 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 134803 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 3640 रुपये या 2.7 फीसदी की मजबूती के साथ 138443 रुपये प्रति 10 ग्राम बंद हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 202899 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 224430 रुपये और नीचे में 202656 रुपये पर पहुंचकर, 203565 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 20225 रुपये या 9.94 फीसदी की तेजी के संग 223790 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 20046 रुपये या 9.81 फीसदी की बढ़त के साथ 224310 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 20044 रुपये या 9.81 फीसदी बढ़कर 224313 रुपये प्रति किलो के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ।

मेटल वर्ग में 32024.99 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 50.1 रुपये या 4.46 फीसदी की तेजी के संग 1172.45 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता जनवरी वायदा 1.95 रुपये या 0.64 फीसदी की तेजी के संग सप्ताह के अंत में 305.05 रुपये प्रति किलो हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 2.8 रुपये या 0.98 फीसदी बढ़कर 288.15 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि सीसा जनवरी वायदा 65 पैसे या 0.36 फीसदी चढ़कर 182.35 रुपये प्रति किलो के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 43826.93 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल जनवरी वायदा 5067 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 5303 रुपये और नीचे में 5026 रुपये पर पहुंचकर, सप्ताह के अंत में 158 रुपये या 3.09 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 5272 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 156 रुपये या 3.05 फीसदी की मजबूती के साथ 5272 रुपये प्रति बैरल बंद हुआ। इनके अलावा नैचुरल गैस जनवरी वायदा 333.2 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 357.9 रुपये और नीचे में 314 रुपये पर पहुंचकर, 335.9 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 3.2 रुपये या 0.95 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 339.1 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 3.1 रुपये या 0.92 फीसदी की तेजी के संग 339.2 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल जनवरी वायदा 961 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के अंत में 1.5 रुपये या 0.16 फीसदी बढ़कर 956.4 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान सोना के विभिन्न अनुबंधों में 128990.24 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 166067.20 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 26823.06 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 1649.17 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 124.27 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 3428.49 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 4206.19 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 39549.93 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सप्ताह के अंत में सोना के वायदाओं में 14550 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 36631 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 10251 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 158817 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 17558 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 12566 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 30455 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 54931 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 18698 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 23146 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 33183 पॉइंट पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 34941 के उच्च और 33111 के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 1216 पॉइंट बढ़कर 34492 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सूरत जिले की नवगठित अंबिका तहसील में राष्ट्रीय आदिवासी उद्योग मेला-2025 का प्रारंभ कराया

▶▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिया गया 'वोकल फॉर लोकल-लोकल फॉर ग्लोबल' का मंत्र यह तीन दिवसीय राष्ट्रीय उद्योग मेला साकार करेगा : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▶▶ मुख्यमंत्री ने सूरत जिले में 858 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों का ई-शिलान्यास तथा ई-लोकार्पण किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सूरत जिले की अंबिका तहसील में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय आदिवासी उद्योग मेले का शुक्रवार को प्रारंभ कराते हुए विश्वास व्यक्त किया कि यह मेला प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिया गया वोकल फॉर लोकल-लोकल फॉर ग्लोबल का मंत्र साकार करेगा। राज्य के समस्त आदिवासी समाज तथा सहयोगी संस्थाओं के उपक्रम से इस राष्ट्रीय आदिवासी उद्योग मेले का 26 से 29 दिसंबर के दौरान सूरत जिले की नवगठित अंबिका तहसील के वसराई में आयोजन किया गया है।

आदिवासी समाज के युवक-युवतियों को स्वरोजगार की प्रेरणा तथा छोटे एवं मध्यम स्तर के एमएसएमई, उद्योगकारों और व्यवसायों को एक मंच पर लाकर व्यवसाय-उद्योगों की व्यापकता बढ़ाने के दृष्टिकोण के साथ यह मेला आयोजित हुआ है। इतना ही नहीं; इस मेले में 370 से अधिक स्टॉल्स, आदिवासी व्यंजनों के 80 से अधिक स्टॉल्स, देशभर के राज्यों के 700 से अधिक प्रतिनिधियों की सहभागिता तथा एमएसएमई के लिए बिजनेस वर्कशॉप 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संकल्प को साकार करेंगे। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने वित्त एवं शहरी विकास मंत्री श्री कनुभाई देसाई, आदिजाति विकास मंत्री नरेशभाई पटेल तथा राज्य मंत्री डॉ. जयराम गामित की उपस्थिति में इस मेले का उद्घाटन करने के साथ सूरत जिले में सड़क एवं भवन विभाग द्वारा 858 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों का ई-शिलान्यास तथा ई-लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने विकसित तथा आत्मनिर्भर भारत का जो विजन दिया है, उसमें आदिवासी उद्योगों, परंपरागत कला-कारीगरी तथा एमएसएमई द्वारा

योगदान दिए जाने में यह मेला नई दिशा देगा। उन्होंने कहा कि गुजरात प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए आत्मनिर्भर-स्वदेशी भारत के इस विजन को भली-भाँति पूरा कर रहा है। उन्होंने इसकी भूमिका की सफलता का वर्णन करते हुए कहा कि राज्य सरकार ने स्वयं-सहायता समूह की महिलाओं तथा स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन एवं कौशलवर्धन केन्द्रों से युवाओं को जॉब सीकर से जॉब गिवर बनाया है। उन्होंने इस बात पर गर्व व्यक्त किया कि सदियों से परिश्रम, प्रामाणिकता तथा स्वाभिमान के साथ जीने वाले गुजरात के आदिवासी समाज के सर्वग्राही विकास के लिए प्रधानमंत्री द्वारा शुरू कराई गई 2 लाख करोड़ रुपए की जनजातीय कल्याण योजना देश में आदिवासियों के विकास के लिए दिशादर्शक बनी है। आदिजाति विकास मंत्री श्री नरेशभाई पटेल ने कहा कि आज हमारे लिए गौरव का दिन है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में शुरू की गई विकास यात्रा को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अविरत बनाए रखा है। ट्राइबल ट्रेड फेयर आदिवासी संस्कृति के संरक्षण के साथ आदिवासी युवाओं को उद्योग-धंधे का अवसर देकर स्थानीय स्तर पर रोजगार देने का प्रयास है। उन्होंने आदिवासी युवा कौशल विकसित कर आगे बढ़ें; ऐसे प्रयासों में सहभागी होने का अनुरोध किया। महुवा के विधायक श्री मोहनभाई ढोडिया ने कहा कि आदिवासी समाज को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार आपके द्वार पर आई है। आदिवासी उद्यमियों को प्रोत्साहित करने का यह अवसर है। इस सरकार ने आदिवासी समाज की चिंता की है। उन्होंने नई तहसील अंबिका के गठन के लिए राज्य सरकार को अभिनंदन दिया। समस्त आदिवासी समाज के अध्यक्ष डॉ. प्रदीप गरासिया ने ट्राइबल ट्रेड फेयर का विवरण देते हुए कहा कि राज्य सरकार स्वदेशी अपनाने के लिए आगे आई है, तब इस ट्राइबल ट्रेड फेयर में लगभग 400 स्टॉल्स हैं। विशेषकर इस फेयर में वोकल फॉर लोकल, प्राकृतिक खेती, आदिवासी खाना-खजाना को प्रोत्साहित कर उद्यमियों को स्वरोजगार प्राप्त कराने का आशय रहा है। उन्होंने बताया कि इको फ्रेंड्ली बिजनेस सेंटर स्थापित करने की भी योजना है। ट्राइबल ट्रेड फेयर के प्रारंभ अवसर पर राष्ट्रीय जनजाति आयोग के अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य, अनुसूचित जाति कल्याण संबंधी संसदीय समिति की अध्यक्ष डॉ. फग्गन सिंह कुलस्ते, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती भाविनी पटेल, बारडोली के सांसद श्री प्रभुभाई वसावा, वलसाड के सांसद श्री धवलभाई पटेल, विधायक सर्वश्री गणपतसिंह वसावा, ईश्वरभाई परमार, कुँवरजी हळपति, संदीपभाई देसाई, विजयभाई पटेल, मुकेशभाई पटेल, मोहनभाई कोंकणी, सामाजिक अग्रणी श्री मानसिंह पटेल, जिला विकास अधिकारी सुश्री शिवानी गोयल सहित महानुभाव उपस्थित रहे।

-:
मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

▶▶ विकसित-आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में आदिवासी उद्योगों, हस्तकला कारीगरों तथा एमएसएमई को योगदान देने में राष्ट्रीय आदिवासी उद्योग मेला नई दिशा देगा

▶▶ परिश्रम, प्रामाणिकता तथा स्वाभिमान के साथ जीने वाले आदिवासी समाज के सर्वग्राही विकास के लिए प्रधानमंत्री द्वारा शुरू कराई गई 2 लाख करोड़ रुपए की जनजातीय कल्याण योजना देश के लिए

चांदलोडिया-साणंद स्टेशनों के बीच ऑटोमेटिक सिग्नलिंग कार्य के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद-विरमगाम सेक्शन में चांदलोडिया-आम्बली रोड-गोराघुमा-साणंद स्टेशनों के बीच ऑटोमैटिक सिग्नलिंग सिस्टम स्थापित कार्य के लिए 27 और 28 दिसंबर 2025 को नॉन इंटरलोकिंग कार्य हेतु ब्लॉक लिया गया है। जिसके कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेंगी। विवरण इस प्रकार है:

निरस्त ट्रेनें

1. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 22959 वडोदरा-जामनगर इंटरसिटी एक्सप्रेस रद्द रहेगी।
2. दिनांक 28.12.2025 की ट्रेन संख्या 22960 जामनगर-वडोदरा इंटरसिटी एक्सप्रेस रद्द रहेगी।

आंशिक रूप से रद्द ट्रेनें

1.दिनांक 28.12.2025 और 29.12.2025 की ट्रेन संख्या 19119 गांधीनगर केपिटल-वेरावल इंटरसिटी एक्सप्रेस गांधीनगर केपिटल-सुरेन्द्रनगर के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

2.दिनांक 27.12.2025 और 28.12.2025 की ट्रेन संख्या 19120 वेरावल-गांधीनगर केपिटल इंटरसिटी एक्सप्रेस सुरेन्द्रनगर-गांधीनगर केपिटल के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

परिवर्तित मार्ग से चलने वाली ट्रेनें

1.दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 22957 गांधीनगर केपिटल-वेरावल सुपरफास्ट एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग गांधीनगर केपिटल-चांदलोडिया B-विरमगाम के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया गांधीनगर केपिटल-कलोल-कटोसण रोड-विरमगाम होकर चलेगी। यह ट्रेन चांदलोडिया नहीं जाएगी।

2. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 12972 भावनगर-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग बोटाद-विरमगाम-अहमदाबाद के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया बोटाद-गांधीग्राम-साबरमती के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन वीरमगाम,सुरेन्द्रनगर गेट,जोरावर नगर,लिंबड़ी और राणपुर स्टेशनों पर नहीं जाएगी।

3. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 09037 बांद्रा टर्मिनस-भुज स्पेशल अपने निर्धारित मार्ग अहमदाबाद-वीरमगाम-ध्रांगध्रा-सामाख्याली के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया अहमदाबाद-महेसाणा-भीलड़ी-सामाख्याली के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन ध्रांगध्रा स्टेशन पर नहीं जाएगी।

4. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 22990 महुवा-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग बोटाद-वीरमगाम-अहमदाबाद के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया बोटाद-गांधीग्राम-साबरमती के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन सुरेन्द्रनगर गेट और वीरमगाम स्टेशन पर नहीं जाएगी।

5. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 19255 सूरत-महुवा एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग अहमदाबाद-वीरमगाम-बोटाद के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया अहमदाबाद-साबरमती-गांधीग्राम-बोटाद के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन सुरेन्द्रनगर गेट और वीरमगाम स्टेशन पर नहीं जाएगी।

6. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 12971 बांद्रा टर्मिनस-भावनगर एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग अहमदाबाद-वीरमगाम-बोटाद के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया अहमदाबाद-साबरमती-गांधीग्राम-बोटाद के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन वीरमगाम, सुरेन्द्रनगर गेट, जोरावर नगर, लिंबड़ी और राणपुर स्टेशनों पर नहीं जाएगी।

7. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 20937 पोरबंदर-दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग वीरमगाम-चांदलोडिया बी-महेसाणा के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया वीरमगाम-महेसाणा-पालनपुर के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन चांदलोडिया स्टेशन पर नहीं जाएगी।

8. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 14311 बरेली-भुज एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग महेसाणा-चांदलोडिया बी-वीरमगाम के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया महेसाणा-वीरमगाम-सामाख्याली के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन चांदलोडिया स्टेशन पर नहीं जाएगी।

9. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 22958 वेरावल-गांधीनगर कैपिटल एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग वीरमगाम-चांदलोडिया बी-गांधीनगर कैपिटल के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया वीरमगाम-कटोसन रोड-कलोल-गांधीनगर कैपिटल के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन चांदलोडिया स्टेशन पर नहीं जाएगी।

10. दिनांक 28.12.2025 की ट्रेन संख्या 26901 साबरमती-वेरावल वंदेभारत एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग साबरमती-चांदलोडिया बी-वीरमगाम के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया साबरमती-कलोल-कटोसन रोड-वीरमगाम के रास्ते चलेगी।

11. दिनांक 28.12.2025 की ट्रेन संख्या 22926 ओखा-अहमदाबाद वंदे भारत एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग वीरमगाम-चांदलोडिया-अहमदाबाद के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया वीरमगाम-कटोसन रोड-कलोल-अहमदाबाद के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन साणंद और साबरमती (जेल साइड) नहीं जाएगी इस दौरान साबरमती (धरमनगर साइड) स्टेशन पर रुकेगी।

ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे पर क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वियन,समिति की तिमाही बैठक सम्पन

"पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक की अध्यक्षता करते हुए तथा हिंदी निबंध, वाक् और टिप्पण प्रतियोगिताओं में विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए।"

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे की क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 26 दिसंबर, 2025 को पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय की ई-पत्रिका 'ई-राजहंस' के 61वें अंक का विमोचन महाप्रबंधक महोदय के कर-कमलों से किया गया। इसके साथ ही रेलवे बोर्ड के आदेशानुसार पश्चिम रेलवे में क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित हिंदी निबंध, वाक् और हिंदी टिप्पण एवं प्रारुप लेखन प्रतियोगिताओं में विजेता 19 प्रतिभागियों को महाप्रबंधक महोदय के कर-कमलों से नकद पुरस्कार राशि एवं प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध कवि एवं राजनेता भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती भी मनाई गई। उनके जीवन के संक्षिप्त परिचय से सदस्यों को अवगत कराया गया और उनकी एक प्रसिद्ध कविता 'गीत नया गाता हूं' का गायन द्वारा प्रस्तुतिकरण भी किया गया। राजभाषा बैठक की अध्यक्षता करते हुए पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री गुप्ता ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई एवं शुभकामनाएं दी और कहा कि उनका दायित्व है कि वे अपने-अपने कार्यस्थल पर राजभाषा को प्रोत्साहित करें साथ ही उन्होंने अपेक्षा की कि जो कर्मी रेलवे बोर्ड स्तर पर आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में सहभागिता करेंगे वे भी पश्चिम रेलवे का परचम लहराएं। उन्होंने कहा कि गृह मंत्रालय एवं रेलवे बोर्ड द्वारा राजभाषा के संबंध में जो भी दिशा-निर्देश जारी किए जाते हैं उसका शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।

बैठक के प्रारंभ में पश्चिम रेलवे के मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री विनीत गुप्ता ने समिति के अध्यक्ष एवं पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक, सभी विभागों के प्रमुखों, सभी अपर मंडल रेल प्रबंधक, सभी मुख्य कारखाना प्रबंधक और अन्य अधिकारियों का स्वागत करते हुए पुस्तकों और पुस्तकालयों के महत्व के संबंध में कहा कि संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी यूनेस्को ने 23 अप्रैल को 'विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस' के रूप में घोषित किया है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य पुस्तकों के महत्व को उजागर करना और साहित्य को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में जब सभी प्रकार की सूचनाएं वेबसाइटों के माध्यम से प्रसारित हो रही हैं तब सभी मंडलों/कारखानों/विभागों की वेबसाइट का अद्यतन होना आवश्यक है। जब कभी वेबसाइट पर कोई भी सामग्री अपलोड की जाती है तो यह निश्चित किया जाए कि वह सामग्री दोनों ही भाषाओं में अपलोड की जा रही है। बैठक में अधिकारियों के लिए एक राजभाषा प्रश्न-मंच का आयोजन भी किया गया, जिसमें प्रश्नों के सही उत्तर देने वाले अधिकारियों को पुरस्कृत किया गया। पश्चिम रेलवे में जुलाई से सितंबर-2025 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति संबंधी आंकड़े समिति की सदस्य सचिव श्रीमती सुनीता अहिरे द्वारा प्रस्तुत किए गए।

पश्चिम रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की इस बैठक में पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ उप महाप्रबंधक श्री कुलदीप कुमार जैन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सड़क संरक्षा परियोजनाएं) श्री अमित कुमार मनुवाल, प्रमुख वित्त सलाहकार श्रीमती ऋचा खरे, प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री विद्याधर अविनाश मालेगांवकर, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी श्रीमती मंजुला सक्सेना, श्री अमित गुप्ता, प्रमुख मुख्य इंजीनियर, श्री रजनीश कुमार, प्रमुख मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर, मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक, उप महाप्रबंधक (सामान्य) श्री उज्ज्वल देव, सचिव/पश्चिम रेलवे श्री सचिन अशोक शर्मा सहित सभी मंडलों के अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं सभी कारखानों के मुख्य कारखाना प्रबंधक आदि अधिकारी उपस्थित थे। बैठक का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

कांदिवली एवं वसई रोड स्टेशनों पर फुट ओवर ब्रिज की सीढ़ियों को 29 दिसंबर, 2025 से बंद किए जाने की सूचना

(जीएनएस)। स्टेशन सुधार कार्यों के संबंध में, कांदिवली एवं वसई रोड स्टेशनों पर फुट ओवर ब्रिज (FOB) के कुछ हिस्सों को यात्रियों की आवाजाही के लिए 29 दिसंबर, 2025 से बंद किया जा रहा है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, कांदिवली स्टेशन पर प्लेटफॉर्म क्रमांक 1 पर स्थित उत्तर दिशा से दूसरे फुट ओवर ब्रिज (FOB) की दक्षिण दिशा की सीढ़ी को यात्रियों के लिए 29 दिसंबर, 2025 से बंद किया जाएगा। हालांकि, इसी फुट ओवर

ब्रिज एवं प्लेटफॉर्म के उत्तर दिशा में समान चौड़ाई की एक नव निर्मित सीढ़ी यात्रियों के उपयोग के लिए उपलब्ध रहेगी।

इसी प्रकार, वसई रोड स्टेशन पर प्लेटफॉर्म संख्या 6 एवं 7 पर स्थित उत्तर दिशा से तीसरे फुट ओवर ब्रिज (FOB) की दक्षिण दिशा की सीढ़ी को भी 29 दिसंबर, 2025 से यात्रियों के लिए बंद किया जाएगा। इसके स्थान पर, यात्रियों के उपयोग हेतु एक नव निर्मित सीढ़ी के साथ 60 मीटर लंबा डेक उपलब्ध कराया जाएगा।

यात्रियों से अनुरोध है कि उपरोक्त व्यवस्थाओं पर ध्यान दें। इससे होने वाली असुविधा के लिए खेद है।

पश्चिम रेलवे द्वारा दादर एवं भुसावल,के बीच स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा उनकी यात्रा की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए दादर एवं भुसावल के बीच विशेष किराये पर चल रही 02 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरों को विस्तारित किया गया है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 09049/09050 दादर – भुसावल (साप्ताहिक) स्पेशल

ट्रेन संख्या 09049 दादर – भुसावल स्पेशल को 27 फरवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09050 भुसावल – दादर विशेष को भी 27 फरवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09051/09052 दादर – भुसावल (त्रि-साप्ताहिक) स्पेशल

ट्रेन संख्या 09051 दादर – भुसावल विशेष को 28 फरवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09052 भुसावल – दादर विशेष को भी 28 फरवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09049 एवं 09051 के विस्तारित फेरों की बुकिंग 28 दिसम्बर, 2025 से सभी पीआरएस काउंटरों एवं आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

बोपल रेलवे फाटक दिनांक 27.12.2025 को रात्रि 22:00 बजे से दिनांक 28.12.2025 को सायं 18:00 बजे तक बंद रहेगा

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत फाटक संख्या–15 (बोपल रेलवे फाटक), रेलवे किमी 516/04-06, जो ब्लॉक स्टेशन गोराघुमा–आंबली रोड के बीच स्थित है, पर गोराघुमा स्टेशन में नॉन इंटरलॉकिंग कार्य किया जाना है।

उक्त कार्य के कारण बोपल रेलवे फाटक दिनांक 27.12.2025 को रात्रि 22:00 बजे से दिनांक 28.12.2025 को सायं 18:00 बजे तक (कुल 20 घंटे) सड़क यातायात हेतु पूर्णतः बंद रहेगा।

इस अवधि के दौरान सड़क यातायात को फाटक संख्या–16A एवं एस.पी. रिंग रोड (हाईवे) के माध्यम से डायवर्ट किया जाएगा।

रेलवे प्रशासन आम नागरिकों एवं वाहन चालकों से अनुरोध करता है कि असुविधा से बचने हेतु वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करें तथा आवश्यक रेल कार्य में सहयोग प्रदान करें।

कांदिवली–बोरीवली सेक्शन पर 6वीं लाइन के कार्य के संबंध में पश्चिम रेलवे का मेजर ब्लॉक

(जीएनएस)। कांदिवली–बोरीवली सेक्शन पर 6वीं लाइन के कार्य को पूरा करने के लिए 20/21 दिसम्बर, 2025 की रात्रि से 18 जनवरी, 2026 तक कुल 30 दिनों का ब्लॉक लिया जा रहा है। इस ब्लॉक के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, बोरीवली स्टेशन पर इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग (EI) पैनल के कमीशनिंग कार्य हेतु 27/28 दिसम्बर, 2025 को 01:00 बजे से 07:00 बजे तक अप एवं डाउन फास्ट लाइनों पर एक मेजर नॉन-इंटरलॉकिंग ब्लॉक लिया जाएगा। इस दौरान कुछ अप मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों का ठहराव बोरीवली स्टेशन पर नहीं होगा। इसके अतिरिक्त, ब्लॉक के पश्चात बोरीवली स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या 8 एवं 9 को 29 दिसम्बर, 2025 तक निलंबित रखा जाएगा।

इस ब्लॉक के कारण, 5वीं लाइन तथा बोरीवली स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या 8 एवं 9 के निलंबन के चलते कुछ उपनगरीय सेवाएं निरस्त रहेंगी तथा बोरीवली/अंधेरी से चलने वाली कुछ ट्रेनें हार्बर लाइन पर केवल गोरेगांव तक ही चलाई जाएंगी।

निरस्त होने वाली ट्रेन:

1.28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 69174 दहानू रोड– बोरीवली मेमू निरस्त रहेगी।

ठहराव में परिवर्तन (हॉल्ट स्किपेज):

1.26 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19038 बरौनी–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन पर नहीं रुकेगी, इसके स्थान पर वसई रोड स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा।

2.27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22946 ओखा–दादर एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन पर नहीं रुकेगी, इसके स्थान पर वसई रोड एवं अंधेरी स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा।

3.27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22904 भुज–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन पर नहीं रुकेगी, इसके स्थान पर वसई रोड एवं अंधेरी स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा।

4.27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09052 भुसावल–दादर विशेष ट्रेन, बोरीवली स्टेशन पर नहीं रुकेगी, इसके स्थान पर वसई रोड एवं अंधेरी स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा।

5.27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22928 अहमदाबाद – बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन पर नहीं रुकेगी, इसके स्थान पर वसई रोड स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा।

6.27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12928 एकता नगर – दादर एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन पर नहीं रुकेगी, इसके स्थान पर वसई रोड स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा।

शॉर्ट टर्मिनेट/ओरिजिनेट होने वाली ट्रेनें:

1. 27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19426 नंदुरबार–बोरीवली एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन के स्थान पर वसई रोड स्टेशन पर टर्मिनेट की जाएगी।
2. 27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19418 अहमदाबाद–बोरीवली एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन के स्थान पर वसई रोड स्टेशन पर टर्मिनेट की जाएगी।
3. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 69139 बोरीवली–वलसाड एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन के स्थान पर दहानू रोड स्टेशन से ओरिजिनेट की जाएगी।
4. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19417 बोरीवली–अहमदाबाद एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन के स्थान पर वसई रोड स्टेशन से ओरिजिनेट की जाएगी।
5. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19425 बोरीवली–नंदुरबार एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन के स्थान पर वसई रोड स्टेशन से ओरिजिनेट की जाएगी।

रिशेड्यूल की जाने वाली ट्रेनें:

1. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22921 बांद्रा टर्मिनस– गोरखपुर एक्सप्रेस, 02 घंटे रिशेड्यूल की जाएगी।
2. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22953 मुंबई सेंट्रल– अहमदाबाद एक्सप्रेस, 01 घंटा 35 मिनट रिशेड्यूल की जाएगी।
3. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20901 मुंबई सेंट्रल– गांधीनगर केपिटल एक्सप्रेस, 01 घंटा रिशेड्यूल की जाएगी।
4. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12953 बांद्रा टर्मिनस–सूरत एक्सप्रेस, 50 मिनट रिशेड्यूल की जाएगी।
5. 27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19218 वेरावल–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस, 01 घंटा रिशेड्यूल की जाएगी।
6. 27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12902 अहमदाबाद–दादर एक्सप्रेस, 01 घंटा रिशेड्यूल की जाएगी।

ब्लॉक के कारण प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण संलग्न परिशिष्टों (Annexures) में दिया गया है।

परिशिष्ट–I: 27 दिसम्बर, 2025 को निरस्त की जाने वाली ट्रेनें।

परिशिष्ट–II: 28 दिसम्बर, 2025 को निरस्त की जाने वाली ट्रेनें।

परिशिष्ट–III: 29 दिसम्बर, 2025 को निरस्त की जाने वाली ट्रेनें।

नोट: उपनगरीय ट्रेनों पर पड़ने वाले प्रभाव की सूचना समयानुसार दी जाएगी।

31 दिसम्बर, 2025 को नववर्ष की सुविधा को ध्यान में रखते हुए किसी भी असामान्य निरस्त ीकरण से बचने के लिए हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं।

ऑटोमैटिक सिग्नलिंग प्रणाली के कमीशनिंग कार्य के चलते भावनगर मंडलकी कुछ ट्रेनों के परिचालन में अस्थायी परिवर्तन

(जीएनएस)। यात्रियों को सूचित किया जाता है कि पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद–विरमगाम खंड में चांदलोडिया–आंबली रोड–गोराघुमा–साणंद स्टेशनों के बीच ऑटोमैटिक सिग्नलिंग प्रणाली के कमीशनिंग कार्य के लिए दिनांक 27 एवं 28 दिसंबर, 2025 को नॉन-इंटरलॉकिंग कार्य किया जाएगा।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इस कार्य के कारण भावनगर रेलवे मंडल से संबंधित कुछ ट्रेनों के परिचालन में अस्थायी परिवर्तन किया गया है, जिसका विवरण निम्नानुसार है:

1.दिनांक 27.12.2025 और 28.12.2025 को गांधीनगर कैपिटल से चलने वाली गाड़ी संख्या 19119 गांधीनगर कैपिटल – वेरावल एक्सप्रेस गांधीनगर कैपिटल – सुरेन्द्रनगर जंक्शन के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी। अर्थात् यह ट्रेन 27 व 28 दिसंबर, 2025 को सुरेन्द्रगर जं. और वेरावल के बीच संचालित होगी। 2. दिनांक 27.12.2025 और 28.12.2025 को वेरावल से चलने वाली गाड़ी संख्या 19120 वेरावल - गांधीनगर कैपिटल एक्सप्रेस सुरेन्द्रनगर जंक्शन- गांधीनगर कैपिटल के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी। अर्थात् यह ट्रेन 27 व 28 दिसंबर, 2025 को वेरावल और सुरेन्द्रनगर जं. के बीच संचालित होगी। 3. दिनांक 27.12.2025 को गांधीनगर कैपिटल से चलने वाली गाड़ी संख्या 22957 गांधीनगर कैपिटल-वेरावल निर्धारित मार्ग गांधीनगर कैपिटल-

चांदलोडिया बी केबिन-विरमगाम के बजाय परिवर्तित मार्ग गांधीनगर कैपिटल-कलोल-कटोसन रोड-विरमगाम होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन चांदलोडिया स्टेशन पर नहीं रूकेगी। 4. दिनांक 27.12.2025 को भावनगर टर्मिनस से चलने वाली गाड़ी संख्या 12972 भावनगर – बान्द्रा सुपरफास्ट निर्धारित मार्ग बोटाद-विरमगाम-अहमदाबाद के बजाय परिवर्तित मार्ग बोटाद-गांधीग्राम-साबरमती बी.जी. होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन राणपुर, लींबडी, जोरावरनगर, सुरेन्द्रनगर गेट और विरमगाम स्टेशनों पर नहीं रूकेगी। 5. दिनांक 27.12.2025 को महुवा से चलने वाली गाड़ी संख्या 22990 महुवा-बान्द्रा सुपरफास्ट निर्धारित मार्ग बोटाद-विरमगाम-अहमदाबाद की बजाय परिवर्तित मार्ग बोटाद-गांधीग्राम-साबरमती बीजी होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन सुरेन्द्रनगर गेट और विरमगाम स्टेशनों पर नहीं रूकेगी। 6. दिनांक 27.12.2025 को सूरत से चलने वाली गाड़ी संख्या 19255 सूरत-महुवा एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग अहमदाबाद-विरमगाम-बोटाद की बजाय परिवर्तित मार्ग अहमदाबाद-साबरमती बीजी-गांधीग्राम-बोटाद होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन विरमगाम, सुरेन्द्रनगर गेट और लींबडी स्टेशनों पर नहीं रूकेगी। 7. दिनांक 27.12.2025 को बान्द्रा टर्मिनस से चलने वाली गाड़ी संख्या 12971 बान्द्रा-भावनगर सुपरफास्ट निर्धारित मार्ग अहमदाबाद-विरमगाम-बोटाद के बजाय परिवर्तित मार्ग साबरमती बीजी-गांधीग्राम-बोटाद होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन विरमगाम, सुरेन्द्रनगर गेट, जोरावरनगर, लींबडी और राणपुर स्टेशनों पर नहीं रूकेगी। 8. दिनांक 27.12.2025 को पोरबंदर से चलने वाली गाड़ी संख्या 20937 पोरबंदर-दिल्ली सराय रोहिल्ला निर्धारित मार्ग विरमगाम-चांदलोडिया बी केबिन-मेहसाना की बजाय परिवर्तित मार्ग विरमगाम-मेहसाना-पालनपुर जं. होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन चांदलोडिया स्टेशन पर नहीं रूकेगी। 9. दिनांक 27.12.2025 को वेरावल से चलने वाली गाड़ी संख्या 22958 वेरावल-गांधीनगर कैपिटल निर्धारित मार्ग विरमगाम-चांदलोडिया बी केबिन-गांधीनगर कैपिटल की बजाय परिवर्तित मार्ग विरमगाम-कटोसन रोड-कलोल-गांधीनगर कैपिटल होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन चांदलोडिया स्टेशन पर नहीं रूकेगी। 10. दिनांक 28.12.2025 को साबरमती बी केबिन से चलने वाली गाड़ी सख्या 26901 साबरमती बी केबिन-वेरावल वंदे भारत निर्धारित मार्ग साबरमती बी केबिन-चांदलोडिया बी केबिन-विरमगाम की बजाय परिवर्तित मार्ग साबरमती बी केबिन-कलोल-कटोसन रोड-विरमगाम होकर चलेगी। रेल यात्रियों से अनुरोध है कि वे उपरोक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए अपनी यात्रा की योजना बनाएं। ट्रेनों के परिचालन से संबंधित नवीनतम जानकारी के लिए यात्री वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन करें, ताकि किसी प्रकार की असुविधा न हो। असुविधा के लिए रेल प्रशासन को खेद है।